सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746
वर्ष–01 अंक–86 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, गुरुवार 16 अप्रैल 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

सु-विचार
"सच्ची मानवता दूसरों का मदद करना और उन्हें आगे बढ़ाने में सहयोग करना है...!"
अज्ञात...

15 साल का तूफान : वैभव सूर्यवंशी की बैटिंग ने दिग्गजों को किया हैरान

नई दृष्टिबिंदु / नई दिल्ली

क्रिकेट की दुनिया में 15 साल की उम्र में जिस तरह का तूफानी अंदाज देखने को मिल रहा है, उसने हर किसी को चौंका दिया है। युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी अपने ह्यहाई–रिस्क, हाई–रिवॉर्ड खेल से बड़े–बड़े गेंदबाजों पर भारी पड़ रहे हैं। उनकी निडर बल्लेबाजी ने यह साफ कर दिया है कि यह खिलाड़ी लंबी रेस का घोड़ा साबित हो सकता है।

आरसीबी के खिलाफ खेले गए मुकाबले में वैभव ने सिर्फ 26 गेंदों में 78 रन ठोककर सनसनी मचा दी। इस पारी में उन्होंने भुवनेश्वर कुमार और जोश हेजलवुड जैसे अनुभवी गेंदबाजों को भी नहीं बख्शा। मुंबई इंडियंस के खिलाफ भी उनका आक्रामक अंदाज जारी रहा, जिससे साफ है कि दबाव उन्हें डराता नहीं, बल्कि और खतरनाक बना देता है।

दिग्गजों की नजर में वैभव

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर भी वैभव से काफी प्रभावित हैं। उन्होंने उनकी लेंथ और लाइन को जल्दी पहचानने की क्षमता की जमकर तारीफ की, लेकिन साथ ही चेतावनी भी दी कि इस युवा खिलाड़ी पर जरूरत से ज्यादा दबाव न बनाया जाए। गावस्कर के अनुसार, अब विरोधी टीमें वैभव के खेल का बारीकी से अध्ययन करेंगी और उनकी कमजोरियों को खोजने की कोशिश करेंगी—यही उनकी असली परीक्षा होगी।

पूर्व ऑलराउंडर इरफान पठान ने वैभव की तारीफ करते हुए कहा कि बड़े–बड़े गेंदबाज भी इस 15 साल के खिलाड़ी के सामने असहज नजर आ रहे हैं। उनके अनुसार, वैभव का माइंडसेट ही अलग है—वह बड़े गेंदबाजों को ही टारगेट करते हैं।

स्पिन दिग्गज हरभजन सिंह ने भी हैजलवुड के खिलाफ उनकी धुनाई का जिक्र करते हुए कहा कि दुनिया के टॉप गेंदबाजों में शामिल खिलाड़ी को इस तरह खेलना आसान नहीं होता।

वहीं, मुहम्मद कैफ ने उनकी बल्लेबाजी को वीडियो गेम जैसा बताया। उनका कहना है कि वैभव जिस आसानी से जसप्रीत बुमराह, भुवनेश्वर और हैजलवुड जैसे गेंदबाजों की पहली गेंद पर बाउंड्री लगाते हैं, वह अविश्वसनीय है। आक्रामक बल्लेबाजी के लिए मशहूर वीरेंद्र सहवाग ने भी वैभव की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि इतनी कम उम्र में इस तरह का निडर और रोमांचक खेल बहुत कम देखने को मिलता है। सहवाग के मुताबिक, वैभव की बेखौफ बल्लेबाजी में एक खास तरीका छिपा है और उनके लिए आसमान ही सीमा है।

असली परीक्षा अभी बाकी

वैभव सूर्यवंशी ने भले ही अपने शुरुआती मुकाबलों में धमाकेदार प्रदर्शन कर सबको प्रभावित किया हो, लेकिन अब उनकी असली परीक्षा शुरू होगी। जैसे–जैसे विरोधी टीमें उनकी कमजोरियों को समझेंगी, वैसे–वैसे उन्हें खुद को और बेहतर साबित करना होगा। फिलहाल, इतना तय है कि भारतीय क्रिकेट को एक नया निडर सितारा मिल चुका है, जो आने वाले समय में बड़े मंच पर अपना दबदबा बनाने की पूरी क्षमता रखता है।

गोवा मर्डर केस का भिलाई से कनेक्शन : महादेव सट्टा एप के पैसों ने ली जान, 3 संदिग्ध हिरासत में

पुलिस इस पूरे नेटवर्क की कड़ियां जोड़ने में जुटी

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई–गोवा

गोवा के चर्चित कैलांगुटे हत्याकांड की जांच अब छत्तीसगढ़ के भिलाई तक पहुंच गई है। ऑनलाइन सट्टे की दुनिया से जुड़ा यह मामला अब और उलझता जा रहा है, जहां पैसों के विवाद ने एक युवक की जान ले ली।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, Calangute क्षेत्र में गुजरात निवासी राजभर रविनारायण रामदासभाई (29) की हत्या कर दी गई थी। जांच में चौंकाने वाला खुलासा हुआ कि यह हत्या महादेव ऑनलाइन सट्टा एप के पैसों के गबन और लेन-देन के विवाद से जुड़ी हुई है।

पहले भी हो चुकी गिरफ्तारी

इस हाई-प्रोफाइल केस में इससे पहले मध्य प्रदेश निवासी कोमल बारस्कर (28) को गोवा पुलिस गिरफ्तार कर चुकी है। माना जा रहा है कि यह पूरा नेटवर्क ऑनलाइन सट्टेबाजी और पैसों के बड़े लेन-देन से जुड़ा हुआ है।

भिलाई में दबिश, तीन संदिग्ध हिरासत में

मामले की तह तक पहुंचने के लिए गोवा पुलिस की तीन सदस्यीय टीम भिलाई पहुंची। स्थानीय दुर्ग पुलिस, छावनी थाना और एसीसीयू टीम के सहयोग से छावनी क्षेत्र में दबिश दी गई, जहां से दिलेश्वर सेन और भौतिक साहू सहित कुल तीन संदिग्धों को हिरासत में लिया गया है। सभी से गहन पूछताछ जारी है।

सट्टे का काला खेल बना जानलेवा

महादेव सट्टा एप से जुड़े मामलों में पहले भी करोड़ों के लेन-देन और विवाद सामने आ चुके हैं, लेकिन अब यह मामला सीधे हत्या तक पहुंच गया है। पुलिस इस पूरे नेटवर्क की कड़ियां जोड़ने में जुटी है और जल्द ही बड़े खुलासे की संभावना जताई जा रही है।

यह घटना एक बार फिर साबित करती है कि ऑनलाइन सट्टे का यह काला कारोबार अब सिर्फ आर्थिक अपराध नहीं रहा, बल्कि जानलेवा रूप ले चुका है।

यूसीसी की दस्तक, महिलाओं को आधी रजिस्ट्री फीस

साय कैबिनेट के फैसलों ने बदली सियासी और सामाजिक दिशा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

विष्णु देव साय की अध्यक्षता में 15 अप्रैल को हुई कैबिनेट बैठक में ऐसे फैसले लिए गए, जिनका असर सीधे आम जनता की जेब, जमीन और जीवन पर पड़ने वाला है। एक तरफ जहां समान नागरिक संहिता (यूसीसी) की तैयारी शुरू कर दी गई है, वहीं महिलाओं और सैनिकों को आर्थिक राहत देकर सरकार ने सामाजिक संतुलन साधने की कोशिश की है।

कैबिनेट ने राज्य में यूसीसी लागू करने की दिशा में पहला ठोस कदम उठाते हुए रिटायर्ड जज रंजना प्रकाश देसाई की अध्यक्षता में समिति बनाने का फैसला किया है। यह समिति विवाह, तलाक, उत्तराधिकार जैसे मामलों में अलग–अलग कानूनों की जगह एक समान कानून का ड्राफ्ट तैयार करेगी। सरकार का तर्क साफ है—अलग–अलग कानून से न्याय प्रक्रिया उलझती है, एकरूपता से सिस्टम आसान होगा। लेकिन राजनीतिक तौर पर यह फैसला आने वाले दिनों में बहस और बवाल दोनों को जन्म दे सकता है। महिलाओं के नाम संपत्ति खरीदना अब सस्ता होगा। सरकार ने रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट देने का फैसला किया है। सीधे शब्दों में कहें तो—घर–जमीन अब महिलाओं के नाम करवाना ज्यादा फायदेमंद। सरकार को 153 करोड़ का नुकसान होगा, लेकिन इसे नुकसान नहीं, निवेश बताया जा रहा है।

सैनिकों को सम्मान, संपत्ति पर छूट

सेवारत और भूतपूर्व सैनिकों को 25 लाख तक की संपत्ति खरीदने पर स्टाम्प ड्यूटी में 25% छूट दी जाएगी। सरकार का संदेश साफ—देश सेवा के बाद अब आर्थिक राहत।

रेत माफिया पर शिकंजा, खदानों में सख्ती : रेत खदानों को अब सरकारी उपक्रमों के लिए आरक्षित किया जा सकेगा। मतलब—निजी ठेकेदारों का एकाधिकार टूटेगा और सप्लाई सुधरने की उम्मीद। इसके साथ ही अवैध खनन पर जुर्माना 25 हजार से बढ़ाकर 5 लाख तक कर दिया गया है। अब रेत का खेल करना पड़ेगा महंगा।

पशुपालकों व किसानों के लिए राहत पैकेज

NDDB के जरिए टीकों की सीधी खरीदी का फैसला लिया गया है, ताकि पशुओं में बीमारी कम हो और दूध उत्पादन बढ़े। साथ ही दुधारू पशु योजना का दायरा बढ़ाकर सभी वर्गों तक कर दिया गया है। 10,536 करोड़ की पेंशन गुत्थी सुलझी–मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के बीच सालों से उलझा पेंशन भुगतान का मामला सुलझा। एमपी सरकार 8,536 करोड़ रुपये 6 साल में लौटाएगी।

राजनीतिक संकेत क्या हैं : इन फैसलों को अगर सीधा पढ़ें तो सरकार एक साथ तीन मोर्चों पर खेल रही है: सामाजिक एजेंडा: UCC, महिला सशक्तिकरण, आर्थिक एजेंडा: उद्योग, खनन, निवेश, राजनीतिक संतुलन: सैनिक, किसान, आम वर्ग कैबिनेट के फैसले सिर्फ फाइलों तक सीमित नहीं हैं—ये आने वाले चुनावी और सामाजिक समीकरणों की बुनियाद भी बन सकते हैं। अब देखना होगा कि एक देश, एक कानून की ओर बढ़ता छत्तीसगढ़ बहस का केंद्र बनता है या बदलाव का मॉडल।

उद्योगों को ऑक्सीजन

औद्योगिक भूमि नियमों में बदलाव कर सरकार ने निवेशकों को सीधा संदेश दिया है— आइए, जमीन भी मिलेगी और नियम भी आसान होंगे। PPP मॉडल को बढ़ावा, NBFC को शामिल करना और लैंड बैंक की स्पष्ट व्यवस्था–ये सब उद्योगों के लिए रेड कार्पेट बिछाने जैसा है।

त्वरित टिप्पणी

आयातित मुख्यमंत्री : विचारधारा की छुट्टी, जीत की गारंटी

आलोक तिवारी

भारतीय राजनीति अब उस मोड़ पर खड़ी है, जहाँ विचारधारा किताबों में मिलती है और सत्ता ट्रांसफर मार्केट में। कभी दल–बदल को राजनीतिक पाप माना जाता था, आज वही करियर ग्रोथ का सबसे तेज रास्ता बन चुका है। और इस कला को अगर किसी ने व्यवस्थित उद्योग का रूप दिया है, तो वह है भारतीय जनता पार्टी। ताजा उदाहरणों पर नजर डालिए—पेमा खांडू और हिमंत बिस्व सरमा। दोनों नेता कांग्रेस की पाठशाला में तैयार हुए, लेकिन मुख्यमंत्री की कुर्सी उन्हें भाजपा के दरबार में मिली। अब इस सूची में एक नया नाम और जुड़ गया है—सम्राट चौधरी।

कभी लालू प्रसाद यादव की राजनीतिक पाठशाला से निकले, फिर नीतीश कुमार के साथ सत्ता का स्वाद चखा, और अब भाजपा के चेहरे के रूप में मुख्यमंत्री पद की शपथ—इसे कहते हैं पूर्ण राजनीतिक परिपक्वता या फिर सिस्टम की समझ। इसे राजनीति का कैंपस प्लेसमेंट कहें या लेटरल एंट्री—पर संदेश साफ है: प्रतिभा कहीं भी हो, कुर्सी वहीं मिलेगी जहाँ अवसर हो।

भाजपा के समर्थक इसे टैलेंट एक्विजिशन मॉडल बताते हैं—यानि जो जिताऊ है, वही अपना है। वहीं आलोचक इसे आयातित नेतृत्व कहकर सवाल उठाते हैं कि क्या इतने विशाल संगठन के पास अपना चेहरा नहीं बचा? क्या दशकों तक झंडा ढोने वाले कार्यकर्ता सिर्फ भीड़ जुटाने तक सीमित रहेंगे? सवाल सिर्फ भाजपा पर नहीं, कांग्रेस पर भी उतना ही बड़ा है। आखिर क्यों हिमंत बिस्व सरमा जैसे नेता पार्टी छोड़कर चले जाते हैं और दूसरी पार्टी में जाकर मुख्यमंत्री बन जाते हैं? क्या कांग्रेस वाकई लीडरशिप फैक्ट्री से लीडरशिप एक्सपोर्ट यूनिट बन गई है? बनाती कोई और है, चलाता कोई और है—यह राजनीति है या आउटसोर्सिंग?

पूर्वोत्तर की राजनीति तो मानो इस प्रयोगशाला का सबसे सफल मॉडल बन चुकी है। यहाँ स्थानीय चेहरे, क्षेत्रीय समीकरण और दिल्ली की रणनीति का ऐसा मिश्रण तैयार हुआ है कि चुनावी जीत लगभग सुनिश्चित हो जाती है। सर्बानंद सोनोवाल भी इसी कहानी का हिस्सा हैं—क्षेत्रीय पृष्ठभूमि, भाजपा का मंच और मुख्यमंत्री की कुर्सी। लेकिन इस पूरे खेल में सबसे दिलचस्प किरदार है—निष्ठावान कार्यकर्ता। वह वर्षों तक पोस्टर लगाता है, नारे लगाता है, भीड़ जुटाता है और चुनाव के समय उम्मीद करता है कि शायद इस बार पार्टी उसे मौका देगी। लेकिन जैसे ही चुनाव आता है, कोई बाहरी खिलाड़ी एंट्री मारता है और सीधा कप्तान बन जाता है। कार्यकर्ता फिर भी मुस्कुराता है—क्योंकि उसे बताया गया है, पार्टी पहले, बाकी सब बाद में।

अब बड़ा सवाल—क्या यह राजनीति विचारधारा की है या सिर्फ जीत की? अगर जीत ही अंतिम सत्य है, तो फिर कांग्रेस–मुक्त भारत का नारा भी थोड़ा अपडेट होना चाहिए—शायद कांग्रेस–युक्त भाजपा ज्यादा सटीक लगे। लेकिन व्यंग्य से हटकर गंभीर बात यह है कि लोकतंत्र में विचारधारा सिर्फ भाषणों की चीज नहीं होनी चाहिए। जब नेता अपनी राजनीतिक यात्रा को इतनी आसानी से बदल लेते हैं, तो मतदाता के सामने भी दुविधा खड़ी होती है—वह किस पर भरोसा करे? पार्टी पर या व्यक्ति पर? अंततः, भारतीय राजनीति एक नए युग में प्रवेश कर चुकी है—जहाँ आयातित और ऑर्गेनिकह्व का फर्क मिटता जा रहा है। अब जीतने वाला ही सही है, और सही वही है जो जीत जाए।और अब इस नए युग का ताजा सूत्र वाक्य शायद यही है—जहाँ मौका, वहीं विचारधारा और सीधे मुख्यमंत्री की तैयारी!

इंसानियत शर्मसार : काम दिलाने का झांसा, नाबालिग की बोली डेढ़ लाख में

नई दृष्टिबिंदु / रायगढ़

रायगढ़ में मानव तस्करी का ऐसा मामला सामने आया है, जिसे सुनकर काम दिलाने जैसे भरोसेमंद शब्द भी शक के घेरे में आ जाते हैं। नाबालिग को नौकरी का सपना दिखाकर पहले बहलाया गया, फिर सौदा हुआ और अंत में उसे देह व्यापार में धकेल दिया गया।

रायगढ़ पुलिस ने इस पूरे खेल का पर्दाफाश करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। गिरोह का नेटवर्क छत्तीसगढ़ से मध्यप्रदेश तक फैला हुआ था, जहां नाबालिग को डेढ़ लाख रुपये में ह्लशादीह्व के नाम पर बेच दिया गया।

सौदेबाजी का खेल

पीड़िता ने पुलिस को बताया कि घर की डांट–फटकार से परेशान होकर वह बाहर निकली थी। तभी एक परिचित लड़की ने उसे काम दिलाने का भरोसा दिया। इसके बाद जो हुआ, वह किसी फिल्म की कहानी नहीं बल्कि हकीकत है—रायगढ़ लाया गया, गिरोह से मिलवाया गया और अगले ही दिन मध्यप्रदेश के सागर पहुंचाकर एक व्यक्ति को पैसे लेकर पत्नी बना दिया गया। यहां शादी कम और सौदा ज्यादा था। आरोपी ने जबरन संबंध बनाए और गिरोह अपना हिस्सा लेकर लौट गया।

किसी तरह नाबालिग वहां से भागकर रायगढ़ लौटी, लेकिन घर जाने की हिम्मत नहीं जुटा सकी। यहीं गिरोह ने उसे फिर अपने कब्जे में लिया और इस बार सीधे देह व्यापार में धकेल दिया। सहारा देने के नाम पर उसे ग्राहकों के पास भेजा जाता और पैसा कोई और गिनता।

पुलिस की एंट्री और गिरोह का अंत

11 अप्रैल को पीड़िता की शिकायत के बाद पुलिस हरकत में आई। जांच शुरू हुई तो पूरा नेटवर्क सामने आ गया। रायगढ़ से लेकर मध्यप्रदेश के छतरपुर तक दबिश देकर पुलिस ने चार दलालों और एक खरीदार को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों पर अपहरण, दुष्कर्म, मानव तस्करी और पॉक्सो एक्ट के तहत कड़ी कार्रवाई की गई है। एक आरोपी अब भी फरार है, जिसकी तलाश जारी है।

सवाल वही—कब रुकेगा ये धंधा?

इस मामले ने एक बार फिर उस कड़वी सच्चाई को उजागर किया है कि आज भी नौकरी और शादी जैसे शब्द कई जगहों पर सिर्फ जाल बिछाने का जरिया बन चुके हैं। एसएसपी शशि मोहन सिंह ने साफ कहा है कि ऐसे गिरोहों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी, लेकिन सवाल यह है कि आखिर कब तक मासूम जिंदगियां इस तरह सौदे की वस्तु बनती रहेंगी? रायगढ़ पुलिस ने एक गिरोह जरूर तोड़ दिया, लेकिन समाज के लिए यह चेतावनी है—हर मीठी बात भरोसे के लायक नहीं होती।

नकली सिगरेट का जखीरा बिलासपुर में पकड़ाया

बिलासपुर। डुप्लीकेट गोल्ड फ्लैक कंपनी की सिगरेट का भंडाफोड़ हुआ है। व्यापार विहार स्थित मालधक्का में नकली सिगरेट की सप्लाई हो रही थी। दिल्ली आईटीसी की टीम ने ग्राहक बनकर नकली सिगरेट की बड़ी खेप पकड़ी है। व्यापार विहार इलाके में एक व्यापारी के पास से करीब 5 लाख रुपए की 4 कार्टून सिगरेट बरामद किया गया है। यह कारोबारी शहर में छोटे–बड़े दुकानदारों को थोक में सिगरेट सप्लाई कर रहा था। मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है। दरअसल, दिल्ली की आईटीसी को पहले ही सूचना मिली थी कि, शहर में नकली सिगरेट की सप्लाई हो रही है। जिस पर बुधवार को टीम के सदस्य बिलासपुर पहुंचे। पहले उन्होंने पान–ठेलों से सैंपल लिए और सिगरेट की जांच की। जिसमें दुकानों में बिक रहे सिगरेट नकली पाए गए।

जनदर्शन में 117 आवेदन प्राप्त, राशन दुकान से खाद्यान्न प्राप्ति के लिए ई-केवायसी आवश्यक

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जिला कार्यालय के सभाकक्ष में आज आयोजित कलेक्टर जनदर्शन में विभिन्न विभागों से संबंधित 117 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्टर अभिजीत सिंह के निर्देश पर डिप्टी कलेक्टर उत्तम ध्रुव ने जनदर्शन में पहुंचे, जनसामान्य लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनी।

उन्होंने जनदर्शन में पहुंचे सभी लोगों की समस्याओं को गंभीरता से सुना और समुचित समाधान एवं निराकरण करने संबंधित विभागों को शीघ्र कार्यवाही कर आवश्यक पहल करने हेतु मार्क किया। जनदर्शन में अवैध कब्जा, आवासीय पट्टा, प्रधानमंत्री आवास, भूमि सीमांकन कराने, सीसी रोड निर्माण, ऋण पुस्तिका सुधार, आर्थिक सहायता राशि दिलाने, बढ़ती गर्मी को ध्यान में रखते हुए स्कूलों का समय बदलने, राशन कार्ड से नाम हटवाने/जुड़वाने, पानी निकासी हेतु नाली की व्यवस्था, पेय जल एवं तालाबों में निस्तारी पानी भरने संबंधी सहित विभिन्न मांगों एवं समस्याओं से संबंधित आज 117 आवेदन प्राप्त हुए। राशन कार्ड से खाद्यान्न न मिलने के एक प्रकरण में खाद्य विभाग अधिकारी ने आवेदक को अवगत कराया कि खाद्यान्न प्राप्ति हेतु ई-केवायसी आवश्यक है। उन्होंने अवगत कराया कि स्वयं के एनड्राइड मोबाइल पर माय ह्लई-केवायसीह्ल डाउनलोड कर आवेदक स्वयं भी ईकेवायसी कर सकते है। इस अवसर पर समाज कल्याण, नगरीय निकाय, खाद्य राजस्व सहित अन्य विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

अग्निवीर भर्ती लिखित परीक्षा की तैयारी के लिए विशेष प्रशिक्षण

भारतीय थल सेना में अग्निवीर भर्ती 2026-27 के लिए 10 अप्रैल 2026 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए थे। इस भर्ती की ऑनलाइन लिखित परीक्षा (सीईई) का आयोजन 01 जून 2026 से 15 जून 2026 के मध्य किया जाना संभावित है। संचालनालय रोजगार एवं प्रशिक्षण छत्तीसगढ़ के निर्देशों के परिपालन में, जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केंद्र, दुर्ग द्वारा आवेदकों की सहायता के लिए 01 मई 2026 से 31 मई 2026 तक परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन प्रस्तावित है। प्रशिक्षण का उद्देश्य पंजीकृत युवाओं को लिखित परीक्षा के लिए बेहतर ढंग से तैयार करना है। इच्छुक एवं पात्र आवेदक जो इस प्रशिक्षण का लाभ उठाना चाहते हैं, वे रोजगार विभाग के आधिकारिक पोर्टल erojgar.cg.gov.in पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए आवेदक जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केंद्र, दुर्ग से व्यक्तिगत रूप से संपर्क कर सकते हैं अथवा कार्यालय के फोन नंबर 0788-2323504 या ईमेल ddirempdurg041@gmail.com के माध्यम से भी जानकारी ले सकते हैं। अभ्यर्थी निर्धारित समय सीमा के भीतर आवेदन कर इस निःशुल्क मार्गदर्शन का लाभ ले सकते है।

खास खबर

गांधी मेमोरियल स्कूल नंदनी का 10वीं बोर्ड में शानदार प्रदर्शन

नई दृष्टिबिंदु / नंदिनी अहिवारा

नंदनी नगर गांधी मेमोरियल हायर सेकेंडरी स्कूल, नंदनी के विद्यार्थियों ने सीबीएसई कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षा 2025-26 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सफलता का नया कीतिर्मान स्थापित किया है। विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा, जिससे क्षेत्र में हर्ष का माहौल है।

विद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। यह सफलता विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सतत सहयोग का परिणाम है। विद्यालय प्रबंधन समिति ने सभी सफल विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

प्राचार्या रेवरेन्ट सिस्टर फिन्सी ने बताया कि विद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि सभी के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है।

18 अप्रैल को प्रदेश के निजी स्कूल रहेंगे बंद, असहयोग आंदोलन जारी

रायपुर। प्रदेश के समस्त स्कूल 1 मार्च से असहयोग आंदोलन कर रहें है। इसी कड़ी में 4 अप्रैल को छत्तीसगढ़ प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन ने निर्णय लिया था कि स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा लाटरी के माध्यम से आबंटित वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षक के अधिकार कानून तहत प्रवेश नहीं दिया जायेगा। असहयोग आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए दिनांक 14 अप्रैल को प्रदेश कायर्कारणी की बैठक में निर्णय लिया गया है कि :- 17 अप्रैल, शुक्रवार को सभी स्कूल संचालक एवं शिक्षक काली पट्टी बांधकर काम करेंगे। 18 अप्रैल, शनिवार को प्रदेश के समस्त स्कूल बंद रखेंगे।

इसकी सुचना स्कूल शिक्षा मंत्री को दे दी गई है ।साथ ही छत्तीसगढ़ प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन ने निवेदन किया है स्कूल शिक्षा विभाग इस वर्ष शासकीय स्कूलों में होने वाली प्रति विद्यार्थी राशि (शिक्षा के अधिकार कानून की धारा 12 की उपधारा 2 में भी प्रतिपूर्ति राशि निर्धारण में इस नियम का उल्लेख है)को सार्वजनिक करें ताकि निजी स्कूलों को मिलने वाली प्रतिपूर्ति राशि का निर्धारण हो सके। क्योंकि प्रतिपूर्ति राशि का पुनर्निर्धारण 2011 से अब तक नहीं हुआ है।

एकता कप हॉकी टूर्नामेंट में एचटीसी दुर्ग का कब्जा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जिला हॉकी संघ दुर्ग द्वारा आयोजित एकता कप फ्लड लाइट हॉकी टूर्नामेंट में एचटीसी दुर्ग की टीम ने खिताब पर कब्जा किया। मंगलवार को सिविल लाईन हॉकी ग्राउंड में 7 ए साईड प्रारुप पर खेले गए फाईनल मैच में एचटीसी ने सिवनी की टीम को 1 गोल से शिकस्त दी। यह फाईनल मैच शुरु से रोमांच से भरा रहा। अंतिम नतीजा टाई ब्रेकर से आया। मैच के मैन ऑफ दि मैच और मैन ऑफ दि टूर्नामेंट दीपक यादव रहे। टूर्नामेंट के बेस्ट फार्वड सिवनी के खिलाड़ी एडी, बेस्ट मिड फिल्डर निहाल हुसैन, बेस्ट डिफेंडर सिवनी के अनुराग और बेस्ट गोलकीपर एचटीसी दुर्ग के खिलाड़ी वैभव चंदेल बने। टूर्नामेंट में उभरते खिलाड़ी तिलक और तन्मय ने अपने शानदार प्रदर्शन से दशर्को का पसंदीदा खिलाड़ी बनने का गौरव हासिल किया। टूर्नामेंट की रनरअप सिवनी मध्यप्रदेश की टीम रही, जबकि भुसावल की टीम ने टूर्नामेंट में तीसरा स्थान हासिल किया।

फाईनल मैच में दुर्ग महापौर अलका बाघमार बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला भाजपा अध्यक्ष सुरेन्द्र कौशिक ने की। विशेष अतिथि के रुप में अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी सबा अंजुम, जिला भाजपा किसान मोर्चा अध्यक्ष रोहित सिंह राजपूत, एमआईसी प्रभारी चंद्रशेखर चंद्राकर, लीलाधर पाल, निलेश अग्रवाल, जिला भाजपा प्रवक्ता अरुण सिंह, जिला भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष तृप्ति चंद्राकर, प्रदेश हॉकी संघ अध्यक्ष फिरोज अंसारी, पार्षद सरिता विनोद चंद्राकर, लोकेश्वरी ठाकुर, पार्षद प्रतिनिधि सुरेश गुप्ता, बसंती गायकवाड़, भाजपा नेता विनोद चंद्राकर, अरविंद ताम्रकार मौजूद रहे। अतिथियों द्वारा विजेता टीम एचटीसी दुर्ग को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। सिवनी और भुसावल की टीम को क्रमशः रनरअप और तीसरा पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महापौर अलका बाघमार ने कहा कि एकता कप हॉकी प्रतियोगिता हमें यह प्रेरणा देती है कि चाहे साधन और संसाधनों का कितना भी अभाव हो, वह दृढ़ इच्छाशक्ति के आगे सब बौने साबित होते है। उन्होने जिला हॉकी संघ को आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि शहर में पूर्व की भांति बहुत जल्द ही खेलप्रेमियों को महापौर ट्रॉफी का आयोजन देखने का अवसर मिलेगा। दुर्ग नगर निगम जिला हॉकी संघ के हर गतिविधियों में साथ है। जिला भाजपा अध्यक्ष सुरेन्द्र कौशिक ने कहा कि जिला हॉकी संघ द्वारा शहर में लंबे समय से हॉकी एस्ट्रोटर्फ ग्राउंड की मांग करते आ रही है। उनकी मांगो को हरसंभव पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। इसके पहले जिला हॉकी संघ के उपाध्यक्ष और मीडिया प्रभारी सूर्यमणि मिश्रा ने कहा कि जिला हॉकी संघ द्वारा आगामी समय में भी ऐसे आयोजन किए जाएंगे। जिससे दुर्ग में हॉकी टूर्नामेंट का नाम देश व प्रदेश में रौशन हो सके। श्री मिश्रा ने बताया कि बच्चों को हॉकी खेल से जोड़ने के लिए जल्द ही ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया जाएगा। जिससे खेल प्रतिभाएं और आगे आएंगे।

आयोजन में जिला हॉकी संघ के अध्यक्ष अय्युब इरफान, सचिव जहांगीर खान, उपाध्यक्ष सूर्यमणि मिश्रा, सुनील नवघरे, वहीद खान, अब्दुल हनीफ खान, मोहम्मद एजाज कुरैशी, सहसचिव रशीद अली खान, खुर्शीद बख्श, फहीम खान, मोहम्मद फारुख, उबेद कुरैशी, धीरेन्द्र यादव, कोषाध्यक्ष नियाजुद्दीन शेख, सह कोषाध्यक्ष इशाक खान, हॉकी खिलाड़ी विनोद वाघ, दलबीर सिंह, डॉ. अजय लांजीवार, मिर्जा शफी अहमद, नजुमुद्दीन, अंसार खान, गुलाम रहमानी, विनीता नवघरे, भूमि उपाध्याय एवं अन्य खिलाड़ियों ने व्यवस्था बनाने में योगदान दिया। बता दें कि जिला हॉकी संघ द्वारा टूर्नामेंट को रोमांचक बनाने 7 ए साईड प्रारुप पर आयोजित एकता कप हॉकी टूर्नामेंट में देश व प्रदेश की कुल 20 हॉकी टीमें शामिल हुई। जिनमें नागपुर, भुसावल (महाराष्ट्र), उमरिया, सिवनी (म.प्र.), दुर्ग, राजनांदगांव, कवर्धा, कुरुद, रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, जगदलपुर (छ.ग.), एचटीसी के अलावा अन्य टीमें शामिल थी। फाईनल मैच रोमांच से भरा रहा। जिसे देखने हजारों की संख्या में खेलप्रेमी मैदान में डटे रहे।

हज कमेटी ने आयोजित किया गया हज प्रशिक्षण शिविर

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ राज्य हज कमेटी द्वारा हज प्रशिक्षण शिविर का आयोजन स्वामी विवेकानंद सभागार, दुर्ग में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद विजय बघेल, अध्यक्षता मिर्जा एजाज बेग (अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राज्य हज कमेटी) तथा विशिष्ट अतिथि अलका वाघमार (महापौर) उपस्थित रहीं। इस अवसर पर सुरेन्द्र कौशिक, रजा खोखर, गायत्री वर्मा, हाजी कासिम, आरिफ अली, ज्योति वर्मा, हैदर अली, खालिद रिजवी, अमजद अली सहित अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

मिर्जा एजाज बेग ने कहा कि हज यात्रा के दौरान नियमों और व्यवस्थाओं की जानकारी बेहद आवश्यक है। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ से इस वर्ष बड़ी संख्या में हाजी जा रहे हैं, जिनमें दुर्ग से लगभग 260 यात्री शामिल हैं। वतर्मान में ऑनलाइन प्रक्रिया से आवेदन आसान हुआ है और राज्य सरकार द्वारा यात्रियों के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

महापौर अलका वाघमार ने केंद्र सरकार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी हाजियों की सफल और सुरक्षित यात्रा की कामना की। सुरेन्द्र कौशिक ने बताया कि यह प्रशिक्षण शिविर हाजियों को स्वास्थ्य परीक्षण और आवश्यक जानकारी देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है।

मुख्य अतिथि विजय बघेल ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत की पहचान हिंदू-मुस्लिम एकता है। उन्होंने कहा कि हज पर जाने वाले सभी यात्री अपने देश और परिवार की खुशहाली के लिए दुआ करें। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि आज देश का सम्मान विश्वभर में बढ़ा है और भारतीयों को हर जगह सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। कार्यक्रम के अंत में सभी हाजियों को शुभकामनाएं देते हुए उनकी यात्रा के सफल एवं सुरक्षित होने की कामना की।

नाला, सब्जी मंडी और खेल परिसर का निरीक्षण

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

संभाग आयुक्त सत्य नारायण राठौर, कलेक्टर अभिजीत सिंह एवं निगम आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय ने जोन-1 नेहरू नगर क्षेत्र में विभिन्न स्थलों का निरीक्षण कर आवश्यक सुविधाओं को प्राथमिकता के आधार पर सुव्यवस्थित करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। निरीक्षण के दौरान कोसा नाला, राधिका नगर रिक्त भूखण्ड, सब्जी मंडी एवं खेल परिसर का बारीकी से अवलोकन किया गया।

राधिका नगर स्थित कोसा नाला में रिटर्निंग वाल निर्माण का संयुक्त निरीक्षण किया। नाले में बहते पानी के साथ जलकुंभी पाए जाने पर बरसात से पूर्व इसकी सफाई कराने के निर्देश दिए, ताकि वर्षा के समय जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो। आकाश गंगा सब्जी मंडी में बढ़ती भीड़ और पार्किंग समस्या को देखते हुए सुपेला थाना के पीछे स्थित रिक्त भूमि का भी अवलोकन किया गया। यातायात व्यवस्था को सुचारू तरीके से बनाए रखने के लिए सब्जी मंडी को उक्त स्थान पर शिफ्ट किया जाएगा। सब्जी मंडी निरीक्षण के दौरान व्यापारियों की समस्याएं भी सुनी गईं। इसके अलावा प्रियदर्शिनी परिसर स्थित खेल परिसर का निरीक्षण कर निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का जायजा लिया गया तथा कार्य को निर्धारित ले-आउट के अनुसार ही कराने के निर्देश दिए गए। साथ ही रेलवे लाइन के किनारे प्रस्तावित सड़क निर्माण स्थल का भी अवलोकन कर कार्य शीघ्र प्रारंभ करने के निर्देश अधिकारियों को दिए गए। निगम प्रशासन द्वारा शहर में बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ करने और यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए लगातार निरीक्षण और आवश्यक कारर्वाई की जा रही है। निरीक्षण के दौरान अनुविभागीय दंडाधिकारी महेश राजपूत, तहसीलदार डीकेश्वर साहू, उपायुक्त डी. के. कोसरिया, जोन आयुक्त अजय राजपूत, कार्यपालन अभियंता संजय अग्रवाल, अरविंद शर्मा, सहायक अभियंता फत्तेलाल साहू, राजस्व अधिकारी जे.पी. तिवारी, स्वास्थ्य अधिकारी जावेद अली, उप अभियंता पुरूषोत्तम सिन्हा, बसंत साहू, दौलत चंद्राकर, अंकित सक्सेना, राजस्व निरीक्षक, पटवारी सहित अन्य उपस्थित रहे।

बंगाली समाज ने मनाया नववर्ष और बैसाखी पर्व

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

कालीबाड़ी सेक्टर 6 में बंगाली समाज द्वारा नए वर्ष की उपलक्ष में बैसाखी पर्व में सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। जिसमें बंगाली समाज के हजारों लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए साथ में नए वर्ष की उपलक्ष में मिठाई खिलकर एक दूसरे को बधाई दिए व समाज के लोग एक जगह उत्सव मनाया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से हमारे छत्तीसगढ़ शासन खादी व ग्राम उद्योग बोर्ड अध्यक्ष राकेश पांडे कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त व कन्हैया सोनी, भाजपा प्रदेश युवा मोर्चा के राहुल टिकरिया व बंगाली समाज के अध्यक्ष सुमन शील, युवा मोर्चा के अध्यक्ष सौरभ जयसवाल छावनी की पार्षद श्रीमती वीणा चंद्राकर युवा मोर्चा व महिला मोर्चा की कार्यकर्ता और समाज के लोगों के साथ कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

विवाद का वैकल्पिक समाधान सेमिनार का सफल आयोजन, विद्यार्थियों को दी गई विधिक जानकारी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग द्वारा सुराना कॉलेज में एलएलबी द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर) के विद्यार्थियों के लिए विवाद का वैकल्पिक समाधान विषय पर एक महत्वपूर्ण सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सतकर्ता हमारी साझा जिम्मेदारी है विषय पर भी विशेष जानकारी प्रदान की गई।

सेमिनार में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग की स्थायी लोक अदालत की अध्यक्ष सहित जिला एवं सत्र न्यायालय, दुर्ग के न्यायाधीश एवं मीडिएटर अधिवक्ता उपस्थित रहे। अतिथियों का महाविद्यालय परिसर में भव्य स्वागत किया गया, जिसके बाद दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

कार्यक्रम के दौरान न्यायाधीशों ने विद्यार्थियों को अऊफ़ की अवधारणा, उसके महत्व और उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अऊफ़के माध्यम से विवादों का समाधान पारंपरिक न्यायिक प्रक्रिया की तुलना में अधिक सरल, त्वरित और किफायती तरीके से किया जा सकता है। लोक अदालत एवं मीडिएशन की प्रक्रिया को व्यावहारिक उदाहरणों के साथ समझाया गया, जिससे विद्यार्थियों को विषय को आसानी से समझने में मदद मिली। साथ ही मीडिएशन की अवधारणा को महाभारत के प्रसंगों से जोड़कर रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया।

इसके अलावा सेमिनार में साइबर फ्रॉड के बढ़ते मामलों, उसके प्रकारों एवं बचाव के उपायों पर भी महत्वपूर्ण जानकारी दी गई, जिससे विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ी।

कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों को कानून का सम्मान करने एवं उसका पालन करने की शपथ दिलाई गई तथा राज्यगीत के साथ समापन किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए विभिन्न विधिक विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका न्यायाधीशों ने सरल एवं संतोषजनक उत्तर दिया। यह विधिक साक्षरता कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी और ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ, जिससे उन्हें न्याय व्यवस्था और वैकल्पिक विवाद निवारण की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने का अवसर मिला।

स्वच्छ भारत मिशनके तहत दुर्ग जिले में फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट संचालित, सेप्टिक टैंक सफाई के लिए प्रशासन की अपील

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अंतर्गत जिले में स्वच्छता और सुरक्षित अपशिष्ट प्रबंधन को मजबूत करने के उद्देश्य से 5 फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित कर संचालित किए जा रहे हैं। ये प्लांट ग्राम पंचायत कोलिहापुरी (दुर्ग), पथरिया एवं लिटिया (धमधा), तथा पतोरा एवं रानीतरई (पाटन) में कार्यरत हैं।

जिला प्रशासन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सेप्टिक टैंक की नियमित और सुरक्षित सफाई सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं। पूर्व में जनपद पंचायत धमधा और पाटन को सक्शन मशीन युक्त वाहन उपलब्ध कराए गए थे। वहीं कलेक्टर अभिजीत सिंह द्वारा जनपद पंचायत दुर्ग के लिए जिला खनिज न्यास मद से भी एक विशेष वाहन उपलब्ध कराया गया है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत बजरंग दुबे ने बताया कि इन प्लांट्स का संचालन जनपद पंचायतों के माध्यम से संबंधित ग्राम पंचायतों द्वारा किया जा रहा है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में बने सेप्टिक टैंकों को तकनीकी तरीके से समय-समय पर खाली करने की सुविधा दी जा रही है। प्रशासन ने जिला एवं विकासखंड स्तर पर संपर्क नंबर भी जारी किए हैं, जिन पर सूचना देने पर वाहन भेजकर न्यूनतम दरों पर टैंक की सफाई और अपशिष्ट का सुरक्षित निपटान किया जाएगा।

प्रशासन ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे अपने सेप्टिक टैंक की सफाई हर 3 से 4 वर्षों में अनिवार्य रूप से कराएं, ताकि स्वच्छता बनी रहे और बीमारियों से बचाव हो सके। इधर, प्रशासन ने चेतावनी भी दी है कि बाहरी राज्यों से आए कुछ निजी वाहन अधिक शुल्क लेकर अपशिष्ट को खुले में फेंक रहे हैं, जिससे प्रदूषण फैल रहा है। इस संबंध में ग्राम पंचायत धौराभाटा (पाटन) और धमधा क्षेत्र के मुरमुंदा में शिकायत मिलने पर संबंधित थाना पुलिस द्वारा एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई की गई है।

जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि अवैध रूप से अपशिष्ट निपटान करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी और स्वच्छता बनाए रखने में आमजन से सहयोग की अपेक्षा की गई है।

वक्फ बोर्ड अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने केबिनेट के निर्णय का किया स्वागत

कहा – प्रदेश में यूसीसी लागू होने से समाज में समानता का मार्ग होगा प्रशस्त

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ राज्य वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की अध्यक्षता में केबिनेट बैठक में 'समान नागरिक संहिता' (वउउ) लागू करने का स्वागत किया है। उन्होंने इस निर्णय पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं उनके पूरे मंत्रिमंडल का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए उनका

अभिनंदन किया है।

डॉ. सलीम राज ने कहा कि अब वह समय नहीं रहा जब देश किसी खास विचारधारा या तुष्टीकरण की राजनीति से चले। उन्होंने स्पष्ट किया कि देश केवल और केवल संविधान से चलेगा, न कि किसी शरीयत या व्यक्तिगत कानून से। यही हमारे लोकतंत्र की असली ताकत है। डॉ. राज ने कहा कि समान नागरिक संहिता का समर्थन करना हर नागरिक का कर्तव्य है ताकि समाज में समानता और विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। यह किसी धर्म के खिलाफ नहीं, बल्कि राष्ट्र की एकता के पक्ष में है।

उन्होंने पुरानी सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि लंबे समय तक समुदायों के बीच भ्रम और भय पैदा कर वोट बैंक की राजनीति की गई। लेकिन अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र पर आगे बढ़ रहा है।

डॉ. सलीम राज ने मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना का उदाहरण देते हुए कहा कि जिस तरह प्रदेश में सभी धर्मों के लोग अपने-अपने रीति-रिवाजों के साथ एक ही मंडप के नीचे सरकारी योजनाओं का लाभ ले रहे हैं, उसी तरह 'समान नागरिक संहिता' भी सामाजिक ताने-बाने को और मजबूत करेगी।

पीएम के दृढ़इच्छाशक्ति और साहसिक निर्णय से पूरा होगा महिलाओं का सपना : सीएम साय

नारी शक्ति वंदन अधिनियम 21वीं सदी का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने राजधानी रायपुर स्थित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में आयोजित नारी शक्ति वंदन महासम्मेलन में शामिल हुए और कार्यक्रम को संबोधित किया। उन्होंने इस दौरान महिलाओं के सशक्तिकरण को लेकर केंद्र और राज्य सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 का पारित होना देश की महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक ऐतिहासिक कदम है, जिससे निर्णय प्रक्रिया में उनकी प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित होगी।

मुख्यमंत्री ने मातृशक्ति का अभिनंदन करते हुए कहा कि भारतीय सनातन परंपरा में नारी का स्थान सर्वोच्च है। हम भगवान से पहले भगवती की पूजा करते हैं और ऐश्वर्य के लिए माता लक्ष्मी, बुद्धि के लिए सरस्वती और बल के लिए दुर्गा की आराधना की जाती हैं। श्री साय ने कहा कि महिलाओं को आरक्षण देने के प्रयास पहले भी हुए, लेकिन इसे प्रभावी रूप से लागू करने का साहसिक निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में ही संभव हो पाया। उन्होंने प्रधानमंत्री के कार्यकाल में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों का उल्लेख करते हुए कहा कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना और महतारी वंदन योजना जैसी पहलों ने महिलाओं के सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि हम इस वर्ष को प्रदेश में महतारी गौरव वर्ष के रूप में मना रहे हैं और महतारी वंदन योजना के माध्यम से 70 लाख महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की सहायता दी जा रही है, जिससे वे शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बस्तर क्षेत्र में नक्सलवाद समाप्त हुआ है और प्रदेश विकास के नए मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने नारी शक्ति वंदन अधिनियम को 21वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण को नया संबल मिलेगा। कार्यक्रम में पंचायत से पार्लियामेंट तक निर्णय में नारी—नए भारत की तैयारी के संकल्प को दोहराया गया। मुख्यमंत्री ने बताया कि पंचायती राज संस्थाओं में पहले से ही 14 लाख से अधिक महिलाएं सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जो उनके बढ़ते आत्मविश्वास का प्रमाण है। उन्होंने इस दौरान पुष्प के साथ महिलाओं का अभिनंदन कर बधाई और शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि महिलाओं की इच्छाशक्ति और संकल्प उन्हें बड़े निर्णय लेने में सक्षम बना रहे हैं। महिलाओं को जिम्मेदारी मिले तो वे देश की तस्वीर बदल सकती हैं। वहीं पूर्व राज्यसभा सांसद सरोज पाण्डेय ने बताया कि यह अधिनियम वर्ष 2029 तक लागू होगा, जिसके तहत लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा। कार्यक्रम में सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, सांसद बृजमोहन अग्रवाल, पद्मश्री ऊषा बारले, विधायक पुरंदर मिश्रा, बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती वर्णिका शर्मा, पद्मश्री ऊषा बारले, प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी नीता डोंगरे सहित अनेक जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कटे होंठ से टूटी हिम्मत तक : एक ऑपरेशन और बदल गई जिंदगी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

कहते हैं कि सही समय पर मिला इलाज किसी की पूरी ज़िंदगी बदल सकता है। सुकमा जिले की 13 वर्षीय बालिका टुंकी लावण्या की कहानी इसी बात का जीवंत उदाहरण है, जिसने कठिन परिस्थितियों और वर्षों की पीड़ा के बाद आखिरकार एक नई मुस्कान और नया आत्मविश्वास पाया है।

लावण्या, जो कन्या आश्रम, गोल्लापल्ली (पालाचेलमा) की निवासी है, जन्म से ही क्लैफ्ट लिप (कटे होंठ) जैसी गंभीर समस्या से जूझ रही थी। यह बीमारी सिर्फ शारीरिक दर्द तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसके बचपन पर सामाजिक झिझक और आत्मविश्वास की कमी का भी गहरा असर डाल रही थी। परिवार में जागरूकता की कमी और इलाज को लेकर भय के कारण लंबे समय तक उसका उपचार नहीं हो पाया। लेकिन किस्मत ने तब करवट ली जब लावण्या मेगा सुपर स्पेशियलिटी स्वास्थ्य शिविर में पहुंची। शिविर में कलेक्टर अमित कुमार और एसपी किरण चव्हाण से मिली। उन्होंने लावण्या को स्वास्थ्य शिविर में जांच कराके बेहतर इलाज का प्रबंध किया।

शिविर में मौजूद स्वास्थ्य विभाग की टीम ने न सिर्फ लावण्या की जांच की, बल्कि उसके परिवार को समझाकर इलाज के लिए तैयार किया। इसी शिविर में आयुष्मान कार्ड बनाया गया। जिला अस्पताल रेफर किया गया। इसके बाद बेहतर इलाज के लिए लावण्या को कालाडा अस्पताल, रायपुर भेजा गया। इस दौरान आरबीएसके चिरायु टीम ने उसे सुरक्षित अस्पताल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी निभाई।

सभी प्रक्रियाओं और समन्वय के बाद आखिरकार 10 अप्रैल 2026 को लावण्या का सफल ऑपरेशन किया गया। यह सिर्फ एक चिकित्सा प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि उसके जीवन के अंधेरे में उम्मीद की रोशनी थी। ऑपरेशन के बाद लावण्या के चेहरे पर लौटी मुस्कान को देखकर परिवार की आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़े। वर्षों का दर्द और ताने जैसे उसी दिन समाप्त हो गए। इस कहानी का सबसे भावुक पल तब आया जब 13 अप्रैल 2026 को सुकमा दौरे के दौरान मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री ने लावण्या से मुलाकात की। उन्होंने लावण्या के स्वास्थ्य की जानकारी ली, उसे फल भेंट किए।

खास खबर

दुर्ग में पेंशन, दिव्यांगजन सहायता, पुर्नवास और सामाजिक सुरक्षा से बदल रही जरूरतमंदों की जिंदगी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं जिले के हजारों जरूरतमंद लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। वृद्धजन, विधवा, दिव्यांगजन और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए संचालित इन योजनाओं से जिले में कुल 82 हजार 583 हितग्राही लाभान्वित हो रहे हैं, जो सामाजिक सुरक्षा के मजबूत तंत्र को दर्शाता है। समाज कल्याण विभाग की योजनाएं न केवल आर्थिक सहायता प्रदान कर रही हैं, बल्कि सामाजिक सम्मान, आत्मनिर्भरता और जीवन की गुणवत्ता को भी बेहतर बना रही हैं।

उप संचालक समाज कल्याण विभाग ने बताया कि विभाग की ये योजनाएं जशपुर जिले में सामाजिक सुरक्षा का मजबूत आधार तैयार कर रही हैं। इससे समाज के हर वर्ग को सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर भी प्राप्त हो रहा है। यह पहल जिले में समावेशी विकास और सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है।

जशपुर जिले में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना के तहत 16,509 बुजुर्गों को नियमित सहायता मिल रही है। वहीं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना से 4,356 महिलाओं को लाभ मिल रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय दिव्यांग पेंशन योजना के तहत 656 दिव्यांगजन लाभान्वित हैं, जबकि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना से 14,294 और सुखद सहारा पेंशन योजना से 4,407 हितग्राहियों को सहायता मिल रही है। सबसे अधिक लाभार्थी मुख्यमंत्री पेंशन योजना के अंतर्गत हैं, जिसमें 40,244 लोग शामिल हैं। इसी प्रकार परिवार सहायता योजना के तहत 102 परिवारों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है, जिससे संकट की घड़ी में उन्हें संबल मिला है।

दिव्यांगजनों के लिए विभाग द्वारा कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं। दिव्यांगजन छात्रवृत्ति योजना के तहत 180 विद्यार्थियों को सहायता दी गई है। दिव्यांगजन विवाह प्रोत्साहन योजना से 5 हितग्राहियों को लाभ मिला, जबकि कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरण प्रदाय योजना के अंतर्गत 290 दिव्यांगजनों को उपकरण उपलब्ध कराए गए। इसके अलावा दिव्यांगजन सामर्थ्य विकास योजना से 550 हितग्राही लाभान्वित हुए हैं तथा ह्यक्षितिज अपार संभावनाएंह्व योजना के तहत 4 दिव्यांग विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहन दिया गया है। जशपुर जिले में संचालित नशामुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्र के माध्यम से अब तक 157 व्यक्तियों को नशामुक्त कर समाज की मुख्यधारा में जोड़ा गया है। वहीं जशपुर नगर स्थित जनक वृद्धाश्रम में 12 वरिष्ठ नागरिकों को सुरक्षित एवं सम्मानजनक जीवनयापन की सुविधा प्रदान की जा रही है। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत 782 वरिष्ठ नागरिकों को धार्मिक स्थलों की यात्रा का अवसर मिला है, जिससे उनके जीवन में संतोष और आध्यात्मिक सुख की अनुभूति हुई है। इसी प्रकार मोटराइज्ड ट्राईसायकल प्रदाय योजना के माध्यम से दिव्यांगजनों को गतिशीलता प्रदान की जा रही है।

बिलासपुर से अयोध्या धाम के लिए स्पेशल ट्रेन रवाना

रायपुर। बिलासपुर संभाग के विभिन्न जिलों के श्रद्धालुओं के लिए आज एक विशेष आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत हुई, जब 850 यात्रियों को लेकर स्पेशल ट्रेन बिलासपुर रेलवे स्टेशन से अयोध्या धाम के लिए रवाना हुई। इस यात्रा के दौरान यात्रियों को अयोध्या धाम के दर्शन के साथ-साथ काशी विश्वनाथ मंदिर में बाबा विश्वनाथ के दर्शन का भी पुण्य अवसर प्राप्त होगा।

इस विशेष ट्रेन को केंद्रीय मंत्री तोखन साहू ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर राजेश चंद्रवंशी, मंडल रेल प्रबंधक राकेश रंजन, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अनुराग सिंह, जिला पंचायत सीईओ बिलासपुर संदीप अग्रवाल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। ट्रेन के प्रस्थान के दौरान रेलवे स्टेशन पर उत्साहपूर्ण वातावरण देखने को मिला। जिला प्रशासन, छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड, रेलवे तथा आईआरसीटीसी के अधिकारियों एवं कमर्चारियों ने तीर्थ यात्रियों का स्वागत-सत्कार किया।

पारदर्शी डिजिटल प्रक्रिया से शिक्षा के अधिकार को मिला नया विस्तार : मुख्यमंत्री

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सशक्त आधार देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण और दूरदर्शी पहल करते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के अंतर्गत निजी विद्यालयों में प्रवेश हेतु ऑनलाइन लॉटरी प्रक्रिया के माध्यम से 14,403 बच्चों का चयन सुनिश्चित किया। मंत्रालय महानदी भवन से वर्चुअल माध्यम से प्रारंभ हुई यह प्रक्रिया पारदशिर्ता, समान अवसर और डिजिटल सुशासन की प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण बनकर सामने आई है।

राज्यभर से प्राप्त कुल 38,439 आवेदनों में से 27,203 आवेदन निर्धारित मानकों के अनुरूप पात्र पाए गए, जिनमें से ऑनलाइन लॉटरी के माध्यम से 14,403 बच्चों को निजी विद्यालयों में प्रवेश प्रदान किया गया। यह पूरी प्रक्रिया पूर्व निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार राज्य स्तर पर सुव्यवस्थित रूप से संपन्न हुई, जिसमें शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव सहित विभागीय वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है और राज्य सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है कि किसी भी बच्चे की प्रगति आर्थिक अभाव के कारण बाधित न हो। हमारी प्राथमिकता है कि हर बच्चे को समान अवसर के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो।

उल्लेखनीय है कि आरटीई प्रावधानों के तहत निजी विद्यालयों में 25 प्रतिशत सीटें आर्थिक रूप से कमजोर एवं वंचित वर्ग के बच्चों के लिए आरक्षित की गई हैं। इस योजना के माध्यम से राज्य सरकार समाज के अंतिम छोर पर खड़े बच्चों तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाने का सतत प्रयास कर रही है। वतर्मान में इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के 3 लाख 63 हजार से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026-27 के लिए इस योजना के अंतर्गत शुल्क प्रतिपूर्ति राशि को बढ़ाकर 300 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जिससे अधिक से अधिक बच्चों को इस योजना का लाभ मिल सके और निजी विद्यालयों में उनके प्रवेश की प्रक्रिया और सुदृढ़ हो।

पूरी प्रवेश प्रक्रिया को डिजिटल माध्यम से संचालित किया जा रहा है, जिसमें आवेदन से लेकर दस्तावेज सत्यापन और चयन तक के सभी चरण पूर्णतः पारदर्शी और तकनीक आधारित हैं। अभिभावक स्वयं या चॉइस सेंटर के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आवेदन के दौरान ही सिस्टम द्वारा निवास क्षेत्र से 1.5 किलोमीटर के दायरे में स्थित निजी विद्यालयों की जानकारी एवं उपलब्ध सीटों का विवरण प्रदर्शित किया जाता है, जिससे अभिभावकों को सूचित एवं सहज चयन का अवसर प्राप्त होता है। पात्रता के अनुसार 5.5 से 6.5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को कक्षा पहली में प्रवेश दिया जाएगा, जबकि अनुसूचित जाति, जनजाति, दिव्यांग एवं अन्य कमजोर वर्गों को प्राथमिकता प्रदान की जाती है। जिन विद्यालयों में सीटें रिक्त रह जाती हैं, वहाँ जिला स्तर पर ऑफलाइन लॉटरी प्रक्रिया आयोजित की जाएगी, जिसकी जानकारी आरटीई पोर्टल पर उपलब्ध कराई जाएगी।

यह पहल न केवल हजारों बच्चों के शिक्षा के सपनों को साकार कर रही है, बल्कि छत्तीसगढ़ में एक समावेशी, पारदर्शी और उत्तरदायी शिक्षा व्यवस्था को भी मजबूत आधार प्रदान कर रही है। राज्य सरकार का यह प्रयास शिक्षा के क्षेत्र में एक सशक्त और दूरदर्शी परिवर्तन का संकेत है।

सड़क सुरक्षा के साथ शिक्षा की राह भी रोशन कर रहा एनएचएआई

रायपुर। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर और एनएचआईटी ने सामाजिक सरोकार की दिशा में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तरपोंगी में विद्यार्थियों को निशुल्क पावर चश्मों का वितरण किया। गौरतलब है कि सड़क सुरक्षा अभियान के तहत पूर्व में विद्यालय परिसर में नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें कुल 517 विद्यार्थियों की आंखों का विशेषज्ञों द्वारा परीक्षण किया गया। इस जांच के दौरान जिन 42 बच्चों की दृष्टि कमजोर पाई गई थी, आज उन्हें उनकी आवश्यकता और निर्धारित पावर के अनुसार उच्च गुणवत्ता वाले चश्मे सौंपे गए।

एनएचएआई के क्षेत्रीय अधिकारी प्रदीप कुमार लाल ने कहा कि एनएचएआई का उद्देश्य केवल सड़कों का निर्माण करना नहीं है, बल्कि उन सड़कों पर चलने वाली अगली पीढ़ी के भविष्य को भी सुरक्षित और उज्ज्वल बनाना है। हम चाहते हैं कि ये बच्चे बेहतर विजन के साथ जीवन के हर पथ पर सुरक्षित और निडर होकर आगे बढ़ें।

स्त्री परियोजना का शुभारंभ : 300 ग्रामीण महिलाओं को मिलेगा नया रास्ता

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में धमतरी जिले में एक ऐतिहासिक पहल की गई है। कलेक्टोरेट परिसर में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी रायपुर, जिला प्रशासन धमतरी और बीआरपी शासकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज के बीच परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर NIT रायपुर के निदेशक डॉ. एन. वी. रमणा राव, कलेक्टर अबिनाश मिश्रा तथा पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्राचार्य ने संयुक्त रूप से MoU पर हस्ताक्षर कर परियोजना का विधिवत शुभारंभ किया ।कार्यक्रम में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सहित अनेक शिक्षाविद् एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। यह परियोजना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग के TDUPW-A2K+ कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग 90 लाख रुपये की सहायता से संचालित होगी। 36 माह की अवधि में 300 ग्रामीण महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

परियोजना के तहत महिलाओं को कोसा रेशम प्रसंस्करण, फाइबर निष्कर्षण, आधुनिक बुनाई, उत्पाद डिजाइन, उद्यमिता विकास एवं मार्केट लिंकेज जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाएगा। विशेष रूप से आदिवासी एवं वंचित वर्ग की महिलाओं को प्राथमिकता दी जाएगी, जिससे स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग और मूल्य संवर्धन संभव हो सके।

ज्ञात हो कि धमतरी में हैंडलूम और कृषि आधारित आजीविका की अपार संभावनाएं हैं, जिन्हें इस परियोजना के माध्यम से तकनीकी सहयोग से सशक्त किया जाएगा। वहीं, NIT रायपुर के निदेशक डॉ. रमणा राव ने इसे समावेशी नवाचार और जमीनी विकास की दिशा में एक मजबूत कदम बताते हुए महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों को बढ़ावा देने की बात कही। यह पहल न केवल महिलाओं को कौशल विकास का अवसर देगी, बल्कि उन्हें स्वरोजगार और लघु उद्योगों की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग भी प्रशस्त करेगी। रळफएए परियोजना धमतरी में महिला सशक्तिकरण का एक प्रभावी मॉडल स्थापित करते हुए आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को मजबूती प्रदान करेगी।

कॉलेजों में शुरू होगी रक्षक पाठ्यक्रम की पढ़ाई

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा राज्य में रक्षक पाठ्यक्रम को प्रभावी रूप से लागू करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की जा रही है। इस विशेष शैक्षणिक कार्यक्रम का उद्देश्य महाविद्यालयीन विद्यार्थियों के माध्यम से बाल अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना, बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और समाज में बाल संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना है।

इस पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए पूर्व में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी रजवाड़े तथा उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा के सहयोग से एमओयू संपन्न किया गया था। यह समझौता राज्य के उच्च शिक्षण संस्थानों में रक्षक पाठ्यक्रम लागू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है।

इसी क्रम में बुधवार को रायपुर स्थित होटल बेबिलोन में रक्षक पाठ्यक्रम के अंतर्गत तैयार उप-इकाइयों (सब-यूनिट्स) को अंतिम रूप देने हेतु विश्वविद्यालय स्तरीय परामर्श बैठक आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसके बाद आयोग के सचिव प्रतीक खरे और डायरेक्टर श्रीमती संगीता बिंद ने अतिथियों का स्वागत किया। आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि रक्षक पाठ्यक्रम केवल एक शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक सशक्त सामाजिक अभियान है। हमारा प्रयास है कि इसे प्रभावी रूप से लागू कर आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित और जागरूक बनाया जाए।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई नगर, तहसील व जिला दुर्ग

-:: ईश्तहार::-

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय का रा.प्र.क्र. २02604101000069 /अ-6/वर्ष 2025-26 में आवेदिका/आवेदक - शिशिर कुमार श्रीवास्तव आ. नंदकुमार श्रीवास्तव निवासी - 132 वार्ड 01/ मनेंद्रगढ़ तह. दुर्ग व जिला दुर्ग द्वारा ग्राम कुरुद प.ह.नं. 46 रा.नि.मं कोहका जिला दुर्ग द्वारा ग्राम स्वामी हक की भूमि खसरा नं.1179/91 रकबा 0.009 हे./1000 व.फु. हे. है। जो भूमिस्वामी बबीता श्रीवास्तव जौजे शिशिर कुमार श्रीवास्तव के नाम पर दर्ज है। जिसमें भूमिस्वामी बबीता श्रीवास्तव जौजे शिशिर कुमार श्रीवास्तवकी मृत्यु दिनांक 9/2/2019 को फौत हो जाने के कारण मृतक का नाम खाते से विलोपित कर उसके वैध वारिसानो का नाम दर्ज किये जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः उपरोक्त भूमि फौती नामांतरण किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति को आपत्ति या उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 30.04.2026 तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिवक्तागण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदन पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 15.04.2026 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय के मुहर से जारी किया गया है।

अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

संपादकीय

भाजपा का सीएम,बिहार की राजनीति बदलने का संकेत

राजनीति में किसी प्रदेश के राजनीतिक समीकरण बदल देना कोई आसान काम नहीं होता है। वह भी बिहार जैसे देश की राजनीति में अहम स्थान रखने वाले राज्य के राजनीतिक समीकरण बदल देना बहुत ही मुश्किल काम होता है ।इसमें समय लगता है और समय लगने के कारण अपने समय का इंतजार करना पड़ता है,धैर्य रखना पड़ता है ।बरसों अपने से ज्यादा दूसरे को महत्व देना पड़ता है। दूसरे को आश्वस्त करना पड़ता है कि आपके राजनीतिक दल व नेताओं का महत्व कम नही होगा। बिहार में लालू प्रसाद यह काम कर सकते थे लेकिन वह नहीं कर सके लेकिन पीएम मोदी व शाह के नेतृत्व में भाजपा बिहार की राजनीति बदलने जैसा ऐतिहासिक काम करने मे सफल रही है। भाजपा के सम्राट चौधरी का बिहार की सीएम बनना इस बात का संकेत है कि अब राज्य में नए राजनीतिक समीकरण बनने जा रहे हैं।

भाजपा नेता सम्राट चौधरी को मंगलवार को भाजपा विधायक दल की बैठक में सर्वसम्मति से नेता चुन लिया गया है। जिससे उनके बिहार का सीएम बनने का रास्ता साफ हो गया है। इससे पहले नीतीश कुमार ने राज्यपाल को अपना इस्तीफा सौंपा और मंत्रिमंडल भंग कर दिया ।वह राज्यसभा जाने वाले है, इससे राज्य में सत्ता में नेतृत्व परिवर्तन का रास्ता खुल गया है ।भाजपा विरोधियों को इस बात पर हैरानी हो सकती है कि हालिया विधानसभा चुनाव एनडीए गठबंधन ने नीतीश कुमार को सीएम चेहरा घोषित कर लड़ा था। चुनाव के दौरान नारा भी दिया गया था कि पच्चीस से तीस फिर से नीतीश। फिर ऐसा क्या हुआ कि मार्च की शुरुआत में ही नीतीश कुमार ने खुद की राज्यसभा जाने की इच्छा जताई ।

चार महीने के भीतर ऐसा क्या हुआ कि नीतीश कुमार वह नीतीश कुमार जो राज्य की राजनीति छोडने.को तैयार नहीं होते थे, सीएम से कम पर वह साथ देने को राजी न होते थे,वह चार महीनें सीएम पद छोड़ने कर राज्यसभा में जाने को तैयार हो गए। भाजपा ने नीतीश कुमार को ऐसा क्या समझा दिया है कि वह वही कर रहे हैं जो भाजपा चाहती है। भाजपा तो पहले भी बड़े भाई की भूमिका में आना चाहती थी लेकिन नीतीश कुमार राजी नहीं होते थे। कम सीटें जीतने पर भी भाजपा नीतीश कुमार को ही सीएम बनाने पर मजबूर हो जाती थी ।यह बात तो समझ में आती है कि भाजपा ने चुनाव जीतने के लिए नीतीश कुमार को सीएम का चेहरा बनाया। नीतीश चुनाव जीतने के लिए राजी भी हो गए। लेकिन सीएम पद छोड़ने व राज्य सभा जाने के लिए क्यों तैयार हुए। तैयार हुए हैं तो इसका मतलब साफ है कि भाजपा जो चाहती थी वह नीतीश कुमार ने किया है और नीतीश कुमार जो चाहते हैं, वह भाजपा करने को राजी है।

बिहार की राजनीति में एक वक्त था कि भाजपा को नीतीश कुमार पर भरोसा करना पड़ता था क्योंकि बिहार की राजनीति में सरकार नीतीश कुमार के बिना बन नहीं सकती थी। सरकार बनाने के लिए भाजपा को नीतीश कुमार की बात माननी पड़ती थी। अब भाजपा ने नीतीश कुमार को यह एहसास दिला दिया है कि अब वक्त बदल गया है जैसे भाजपा ने एक समय में नीतीश कुमार पर भरोसा किया था उसी तरह अब वक्त है कि नीतीश कुमार को अपने पुत्र,राजनीतिक दल व दल के नेताओं के भविष्य के लिए भाजपा पर भरोसा करना पड़ रहा है ।लगता है कि मोदी और शाह ने नीतीश कुमार को आश्वस्त कर दिया है आपके सीएम नहीं रहने पर भी बिहार में आपका,आपके पुत्र और आपके दल के नेताओं का पूरा ख्याल रखा जाएगा। नीतीश कुमार खुद ही इसके लिए इसलिए भी तैयार हो गए होंगे कि उनकी शारीरिक व मानसिक सेहत भी ऐसी नहीं है कि वह किसी बड़े पद पर रहें।

बिहार मे नीतीश कुमार के सामने दो ही विकल्प थे। एक भविष्य की राजनीति के लिए भाजपा पर भरोसा करना या लालू यादव के परिवार के भरोसा करना। लालू परिवार को वह देख चुके हैं कि कैसे उसने उनकी पार्टी को ही अपनी पार्टी में मिलाने की साजिश की थी। यानी बिहार की राजनीति में से नीतीश परिवार की राजनीति का सफाया करने का प्रयास किया था ।इसलिए नीतीश कुमार लालू यादव परिवार पर तो भरोसा कर नहीं सकते थे.ऐसे में उनके सामने यही विकल्प बचता था कि भाजपा पर ही भरोसा किया जाए और उन्होंने यही किया है ।अब आने वाले दिनों में बिहार की राजनीति में नए राजनीतिक समीकरण बनेंगे और सत्ता की लड़ाई अब दो के बीच होगी और किसी एक को ही बहुमत मिलेगा। महाराष्ट्र के बाद बिहार में भाजपा की यह बड़ी राजनीतिक सफलता है।

जंगलों की कम होती ग्लोबल वार्मिंग से लड़ने की क्षमता

मुकुल व्यास

जंगल कार्बन सिंक का काम करते हैं, वे जितना कार्बन छोड़ते हैं उससे कहीं ज्यादा मात्रा में उसे हटाते हैं। धीरे-धीरे बढ़ने वाले घने पेड़ों ने दशकों तक तनों में कार्बन को बंद रखा, क्योंकि ठोस लकड़ी के हर इंच में ज्यादा पदार्थ समा सकता है। तेजी से बढ़ने वाले पेड़ अक्सर कम उम्र में मर जाते हैं। उनके तने हल्के होते हैं, इसलिए उनमें जमा कार्बन तूफान और क्षय से जल्दी हवा में वापस चला जाता है।

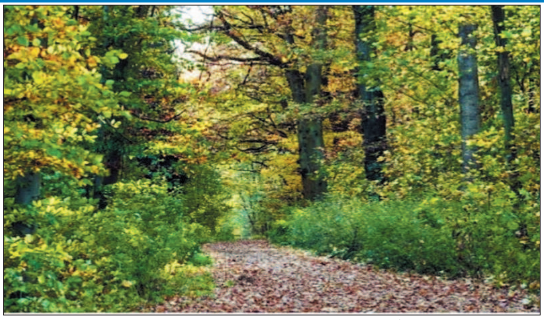

दुनिया के जंगल हमारे पारिस्थितिक तंत्र का आधार हैं और ग्लोबल वार्मिंग से लड़कर पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन अब उनकी विशिष्ट भूमिका कमजोर हो रही है क्योंकि जंगलों में तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों की भरमार हो रही है और लंबे समय तक जीने वाली प्रजातियां तेजी से गायब हो रही हैं। स्थिर और लंबे जीवनकाल वाले पेड़ों की जगह तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों को रखना टिम्बर इंडस्ट्री और जंगल की आग के बाद जल्दी संभलने के लिए फायदेमंद है लेकिन बदलते मौसम का सामना करते समय यह जंगलों को बहुत ज्यादा खतरे में डालता है।

डेनमार्क की ओरहुस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने 31,001 पेड़ों की प्रजातियों का वैश्विक विश्लेषण करके बताया है कि तेजी से बढ़ने वाले पेड़ किन जंगलों में हावी हो रहे हैं। डेनिश वैज्ञानिक जेन्स-क्रिश्चियन स्वेनिंग ने नक्शों का इस्तेमाल करके दिखाया कि धीरे-धीरे बढ़ने वाले, खास किस्म के पेड़ तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियों के आगे हार रहे हैं। स्वेनिंग ने उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय इलाकों में ऐसे कई छोटे पेड़ों का उल्लेख किया है जिनके गायब होने की संभावना सबसे ज्यादा है। एक बार जब तेजी से बढ़ने वाले पेड़ किसी जगह पर हावी हो जाते हैं, तो तूफान, सूखा और कीड़े उस जंगल के बड़े हिस्से को एक साथ गिरा सकते हैं।

दरअसल, लकड़ी काटने, सड़क बनाने और आग लगने से खुली धूप वाली जगहें बन जाती हैं, जहां तेजी से बढ़ने वाले पेड़ बहुत जल्दी फैल जाते हैं। हल्की पत्तियों और मुलायम लकड़ी की वजह से ये पेड़ तेजी से बढ़ते हैं। सूखे या गर्मी की वजह से पानी की कमी होने पर भी ऐसे पेड़ों का बढ़ना जारी रहता है। इन पेड़ों में लकड़ी का घनत्व कम होता है, जिसकी वजह से इनके तने आसानी से टूट जाते हैं और जल्दी सूख जाते हैं। विषम परिस्थितियों में हल्की लकड़ी वाले पेड़ों के मरने की संभावना अधिक होती है। लंबे समय तक चलने वाले पेड़ धीरे-धीरे बढ़ते थे। मौसम खराब होने पर उनकी गहरी जड़ें और मजबूत तने जंगल को एक साथ बनाए रखते थे। घनी लकड़ी और मजबूत पत्तियों ने उन्हें सूखे और कीड़ों से बचने में मदद की।

हाल ही में आई एक रिपोर्ट ने ऐसे पेड़ों के टिकाऊपन को जलवायु सुरक्षा से जोड़ा है। इस तरह के पेड़ जंगल के पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ हैं और स्थिरता और कार्बन भंडारण में योगदान देते हैं। जैसे-जैसे तूफान, कटाई और गर्मी से जंगलों पर दबाव बढ़ता है, पेड़ों की बाहरी प्रजातियां रोशनी, पानी और पोषक तत्वों के लिए मूल पौधों को घेर लेती हैं। यह दबाव दुर्लभ स्थानीय पेड़ों को खत्म होने के करीब ला सकता है। उष्णकटिबंधीय जंगलों में कई पेड़ों की प्रजातियां छोटे-छोटे इलाकों में मिलती हैं, इसलिए कुछ पेड़ों के खत्म होने से पूरा खाद्य चक्र तेजी से कम हो सकता है।

जंगल कार्बन सिंक का काम करते हैं, वे जितना कार्बन छोड़ते हैं उससे कहीं ज्यादा मात्रा में उसे हटाते हैं। धीरे-धीरे बढ़ने वाले घने पेड़ों ने दशकों तक तनों में कार्बन को बंद रखा, क्योंकि ठोस लकड़ी के हर इंच में ज्यादा पदार्थ समा सकता है। तेजी से बढ़ने वाले पेड़ अक्सर कम उम्र में मर जाते हैं। उनके तने हल्के होते हैं, इसलिए उनमें जमा कार्बन तूफान और क्षय से जल्दी हवा में वापस चला जाता है। इससे जंगल लंबे समय तक कार्बन जमा करने में कम असरदार हो जाते हैं। सही पेड़ों के बिना जंगल उन पक्षियों और स्तनपायी जीवों को खो सकते हैं जो बीज फैलाते हैं, जिससे तूफान या आग के बाद जंगल में रिकवरी धीमी हो जाती है। जंगल के प्रबंधक अक्सर जल्दी फसल के लिए तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों को पसंद करते हैं, लेकिन जब पौधों में धीमी गति से बढ़ने वाली प्रजातियां भी शामिल होती हैं, तो जंगल लंबे समय तक अपनी मजबूती बनाए रख सकते हैं। ज्यादा पेड़ चुनने से दुर्लभ आनुवांशिकी सुरक्षित रहती है और जब मौसम का तनाव बढ़ता है, यह जंगल में पुराने विकास वाले गुणों को बनाए रखती है।

एक अन्य अध्ययन में वैज्ञानिकों ने जंगलों की एक और भूमिका को उजागर किया है। अध्ययन में पाया गया कि वन की मिट्टी जलवायु परिवर्तन में जितना योगदान दे रही है, उसका हमें अंदाजा नहीं है। यह साल दर साल चुपचाप हवा से मीथेन को अवशोषित करती रहती है। दक्षिण-पश्चिम जर्मनी में लिए गए नए दीर्घकालिक मापों से पता चलता है कि कुछ वनों में यह भूमिगत मीथेन अवशोषण क्षमता कम होने के बजाय लगातार मजबूत होती जा रही है।

जर्मनी के गोटिंगेन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने लगभग 25 वर्षों तक 13 वन भूखंडों में मीथेन के मूवमेंट का अध्ययन किया और पाया कि मिट्टी की मीथेन अवशोषण क्षमता में प्रति वर्ष लगभग 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह निरंतर वृद्धि नम और शुष्क दोनों मौसमों और धीरे-धीरे बढ़ते तापमान के दौरान देखी गई। यह वृद्धि इस धारणा को चुनौती देती है कि जलवायु परिवर्तन से मिट्टी की मीथेन अवशोषण क्षमता में एक समान कमी आएगी।

नया अध्ययन इस बारे में भी नए सवाल खड़े करता है कि कुछ वन दूसरों की तुलना में तेजी से क्यों बेहतर हो रहे हैं। वनों के सूक्ष्मजीव मीथेन को अवशोषित करते हैं। कम वर्षा के कारण मिट्टी में वायु के लिए अधिक स्थान बचता है, जिससे मीथेन सतह के पास रहने के बजाय तेजी से नीचे की ओर जा सकती है। शुष्क मिट्टी में हवा से भरे छिद्र अधिक होते हैं जिससे मीथेन और ऑक्सीजन दोनों मिट्टी में आसानी से प्रवाहित हो जाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि मीथेन का उपभोग करने वाले सूक्ष्मजीवों को कार्य करने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।

जांचे गए भूखंडों में शोधकर्ताओं ने मीथेन के अधिक अवशोषण को मिट्टी की कम नमी और धीरे-धीरे बढ़ने वाले मिट्टी के तापमान से जोड़ा। मीथेनोट्रोफ्स नामक सूक्ष्मजीव मीथेन का ईंधन के रूप में उपयोग करते हैं। एक बार जब मीथेन ऊपरी मिट्टी तक पहुंच जाती है तो ये जीव विभिन्न प्रतिक्रियाओं के जरिए उसे कार्बन डाइऑक्साइड और पानी के रूप में विखंडित कर देते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि अत्यधिक शुष्क परिस्थितियां सूक्ष्मजीवों की गतिविधि को दबा सकती हैं, जबकि लंबे समय तक गीली मिट्टी ऑक्सीजन के स्तर को कम कर देती है और मीथेन उत्पादक सूक्ष्मजीवों को हावी होने का अवसर देती है।

नासा के अनुसार मीथेन कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में अधिक ऊष्मा अवशोषित करती है, लेकिन यह केवल 7 से 12 वर्षों तक ही बनी रहती है। जब मिट्टी मीथेन को अवशोषित करती है, तो यह वायुमंडल में पहुंचने वाली मीथेन की मात्रा को कम कर देती है, जिससे आने वाले वर्षों में ग्लोबल वार्मिंग का दबाव कम हो जाता है। वन की मिट्टी को इस सेवा के लिए अक्सर श्रेय नहीं दिया जाता। अधिक मीथेन अवशोषण से समस्या का समाधान अपने आप नहीं हो जाएगा, लेकिन इससे उत्सर्जन में कटौती होने तक कुछ समय मिल सकता है।

लेखक विज्ञान मामलों के जानकार हैं।

श्रमिक अशांति

कोरोना संकट के बाद पटरी पर लौटती वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को दुनिया के कई भागों में जारी युद्ध व संघर्ष ने फिर पटरी से उतार दिया है। महाशक्तियों की महत्वाकांक्षा मानवता और आम आदमी के जीवन पर भारी पड़ी है। यूक्रेन युद्ध ने दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं और यूरोप की ऊर्जा आपूर्ति को बाधित जरूर किया, लेकिन उसका असर उतना व्यापक नहीं था, जितना खाड़ी युद्ध का रहा है। जाहिरा तौर पर वैश्विक आपूर्ति शृंखला बाधित होने से आम आदमी के जीवन पर बहुत नकारात्मक असर पड़ा है। बढ़ती महंगाई ने आम आदमी की जीवन शैली व थाली पर गहरा प्रभाव डाला है।

अमेरिका के साम्राज्यवादी मंसूबों और इस्राइल की आक्रामकता से उपजे खाड़ी संकट ने एशिया ही नहीं, बल्कि यूरोप, अफ्रीका व अमेरिका की ऊर्जा आपूर्ति शृंखला को संकट में डाल दिया है। संयुक्त राष्ट्र की विफलता के चलते आज दुनिया में ह्यजिसकी लाठी, उसकी भैंसह्न वाली कहावत चरितार्थ हुई है। जिसका सीधा असर महंगाई वृद्धि के रूप में सामने आया है ।एक ओर ईंधन संकट और उससे बुरी तरह प्रभावित जनजीवन आक्रोश का कारक बना है। विडंबना यह है कि इस महंगाई के बीच कामगारों के वेतन सिकुड़ने लगे हैं। जीवनयापन कठिन होते और कोई समाधान न निकलते देख श्रमिकों का आक्रोश सड़क तक पहुंचने लगा है। सोमवार को उत्तर प्रदेश के नोएडा में फैक्ट्रियों के श्रमिकों द्वारा किया गया हिंसक प्रदर्शन इस संकट की परिणति ही है।

वहीं दूसरी ओर हरियाणा की औद्योगिक नगरी मानेसर में भी पुलिस व श्रमिकों के बीच हिंसक झड़पों की खबरें आई हैं। ये टकराव भारतीय औद्योगिक तंत्र की विसंगतियों की ही याद दिलाते हैं। इस तरह के हिंसक संघर्ष हमारी कानून-व्यवस्था की विफलता को भी उजागर करते हैं। वहीं बताते हैं कि श्रमिक वर्ग, उद्योग और राज्य सरकार के बीच कहीं न कहीं संवाद की कमी है। यही वजह है कि वेतन बढ़ाने की मांग के समर्थन में शुरू हुआ मार्च कालांतर आगजनी, तोड़फोड़ व यातायात बाधित करने में तब्दील हो गया।

निश्चित तौर पर समय रहते इस श्रमिक असंतोष को भांपते हुए बेहतर ढंग से संवाद किया जाता तो शायद टकराव की स्थिति पैदा न होती। दरअसल, सरकारों की तरफ से तो कहा जा रहा है कि देश में ईंधन व गैस आपूर्ति में कोई व्यवधान नहीं है, लेकिन जमाखोरी व प्रशासन की उदासीनता से इसकी कालाबाजारी जारी है। श्रमिक वर्ग जो छोटे गैस सिलेंडरों से जीवन-यापन करता था, उसमें व्यवधान पैदा हो गया। नियंत्रित गैस आपूर्ति से छोटे गैस सिलेंडर भरने का धंधा ठप हो गया। शायद सरकारों को भी इस बात का अहसास नहीं था कि कितना बड़ा श्रमिक वर्ग छोटे गैस सिलेंडरों को भरने के काले धंधे पर निर्भर है।

यही वजह है कि हिमाचल समेत कई राज्यों में खाना पकाने के संकट के चलते श्रमिकों के घर लौटने के मामले प्रकाश में आए हैं। लेकिन इस संकट को शासन-प्रशासन के स्तर पर गंभीरता से नहीं लिया गया। निर्विवाद रूप से बढ़ती महंगाई और स्थिर वेतन के बीच बढ़ती खाई से अशांति की जड़ें गहरी होती जा रही हैं। औद्योगिक केंद्रों में कामगार पश्चिम एशिया युद्ध के चलते बढ़ी महंगाई के कारण दबाव में अपना गुजारा करने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। निस्संदेह, हरियाणा द्वारा न्यूनतम मजदूरी बढ़ाने का निर्णय इस गंभीर वास्तविकता की स्वीकृति को ही दर्शाता है। लेकिन यह भी हकीकत है कि तात्कालिक उपाय के रूप में बातचीत और शिकायतों का फौरी निवारण कारगर विकल्प नहीं हो सकते।

हालांकि, अधिकारी अशांति फैलाने में निहित स्वार्थी तत्वों की भूमिका की जांच कर रहे हैं, लेकिन ये घटनाएं व्यवस्थागत अविश्वास को भी दर्शाती हैं। दरअसल, श्रमिकों का उपेक्षित महसूस करना वातावरण को अस्थिर बनाता है। लेकिन यह एक हकीकत है कि दीर्घकालिक आर्थिक परिवर्तन के लिये विनिर्माण की महत्वाकांक्षाएं स्थिर-प्रेरित कार्यबल के बिना संभव नहीं हैं। औद्योगिक अशांति केवल उत्पादन-निवेश तक ही सीमित नहीं रहती। इससे आपूर्ति शृंखला बाधित होने और निवेशकों का भरोसा कम होने की आशंका भी पैदा होती है। निस्संदेह, आर्थिक प्रगति समावेशी हो। शासन को श्रमिक हितैषी होना चाहिए। विश्वास निर्माण से ही हमारे कारखाने विकास का इंजन बन सकते हैं।

बढ़ेगा गरीबी का दायरा

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यानी यूएनडीपी की पश्चिम एशिया युद्ध से भारत पर पड़ने वाले प्रभावों को उजागर करने वाली रिपोर्ट के निष्कर्ष चिंता बढ़ाने वाले हैं। रिपोर्ट बताती है कि खाड़ी में ईरान-अमेरिकी युद्ध से उपजी परिस्थितियों के चलते भारत में और 25 लाख लोग गरीबी की दलदल में फंस सकते हैं। साथ ही मानव विकास की प्रगति में कुछ कमी आने की आशंका पैदा हो गई है। रिपोर्ट इस बात का भी खुलासा करती है कि पश्चिम एशिया में सैन्य गतिविधियों में वृद्धि से एशिया प्रशांत क्षेत्र में मानव विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

रिपोर्ट बताती है कि ईंधन, मालभाड़ा और कच्चे माल की लागत बढ़ने से लोगों की घरेलू क्रयशक्ति घट रही है, जिससे खाद्य असुरक्षा भी बढ़ रही है। वहीं विकास कार्यों के लिए निर्धारित सरकारी बजट पर भी अतिरिक्त दबाव बढ़ रहा है। इसके अलावा आजीविका के अवसर कम हो रहे हैं। इस संकट में जहां पूरे विश्व में 88 लाख लोगों के गरीबी की चपेट में आने की आशंका है, वहीं भारत में यह अनुमानित संख्या 25 लाख है। रिपोर्ट में पश्चिम एशिया में तनाव के चलते एशिया-प्रशांत में तकरीबन 299 अरब डॉलर तक का नुकसान होने की आशंका है।

हालांकि, भारत की बड़ी आबादी के सामने बढ़ने वाली गरीबों की संख्या छोटी है, लेकिन इससे भारत में गरीबी की दर बढ़ सकती है, जिसके 35.40 करोड़ होने की आशंका है। दरअसल, आज भी भारत करीब 90 फीसदी तेल जरूरतों के लिए आयात पर आश्रित है। हम कच्चे तेल का 40 फीसदी से अधिक और रसोई गैस का 90 फीसदी आयात पश्चिम एशिया से करते हैं। साथ ही हम अपने उर्वरकों का 40 फीसदी हिस्सा युद्धग्रस्त पश्चिमी एशिया से आयात करते हैं। एलएनजी की कीमतों में वृद्धि से कोयला आधारित बिजली पर हमारी निर्भरता बढ़ी है। वहीं दूसरी ओर व्यापार व आपूर्ति शृंखला भी प्रभावित हुई। आशंका है कि संघर्ष से रेमिटेंस में भी कमी आएगी।

निस्संदेह, मालभाड़ा शुल्क, युद्ध जोखिम बीमा, मार्ग परिवर्तन और देरी की वजह से आयातित तेल आदि की कीमतों में वृद्धि हो रही है, जिससे हमारे आयात मूल्य में वृद्धि व निर्यात का नुकसान बढ़ा है। असर हमारी खाद्य सुरक्षा पर भी पड़ रहा है। वहीं खाद की आपूर्ति में बाधा का असर खरीफ की फसल पर पड़ने की आशंका है। इस सब के चलते बढ़े दामों का प्रभाव आम आदमी की जेब पर हो रहा है, जिसका रोजगार और आय के मामले में असर बड़ी आबादी पर नजर आ रहा है। हाल ही में नोएडा और मानेसर में श्रमिक असंतोष को इसकी परिणति के रूप में महसूस किया जा सकता है। दरअसल, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो रही है। आर्थिक परेशानियों के चलते आम आदमी अब अपने जरूरी खर्चों में कटौती कर रहा है। वजह है उसकी आय के साधन सीमित होना।

वहीं निम्न आय वर्ग के लोगों में इससे भरण-पोषण का संकट पैदा हो रहा है। श्रमिक असंतोष के बीच आक्रोश उभरा कि महंगाई के अनुपात में उनकी आमदनी नहीं बढ़ रही, फलतः जीवनयापन कठिन होता जा रहा है। सरकार की ओर से सोमवार को जारी रिपोर्ट में भी स्वीकार किया गया कि मार्च में खुदरा महंगाई बढ़कर 3.4 हो गई है, जिसकी वजह पश्चिमी एशिया से उपजा संकट बताया जा रहा है। सवाल यह है कि आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित करने के प्रयास सिरे क्यों नहीं चढ़ रहे हैं। यदि कदम प्रभावकारी हैं तो फिर महंगाई क्यों बढ़ रही है। वास्तव में खाद्य पदार्थों के दामों में वृद्धि को महंगाई का मुख्य कारण बताया जा रहा है।

यद्यपि सरकार की दलील है कि खुदरा महंगाई दर केंद्रीय बैंक की रेड लाइन चार फीसदी से नीचे है। लेकिन वास्तव में स्थिर आय के चलते महंगाई अधिक महसूस की जा रही है। लेकिन लोगों की चिंता यह है कि यदि पश्चिम एशिया संकट का शीघ्र समाधान नहीं निकलता है तो महंगाई की मार असहनीय हो सकती है। यदि समय रहते सरकार की तरफ से ठोस प्रयास किए जाते हैं तो महंगाई पर अंकुश लगाना संभव हो पायेगा।

लोकतंत्र में महिलाओं को उचित हक दिलाने की पहल

ओम प्रकाश धनकर

नारी शक्ति वंदन क़ानून केवल एक अधिनियम नहीं, भारतीय समाज की उस सामूहिक चेतना का परिचायक है जो स्त्री-पुरुष समानता को हकीकत बनाना चाहती है। यह उस भारत की परिकल्पना है जहां माता-बहनें-बेटियां केवल घर की नहीं, राष्ट्र की भी नियति लिखेंगी। अधिनियम में सुधार तुरंत आने का चाव सम्पूर्ण महिला जगत में देखा जा रहा है।

नारी वंदन क़ानून में सुधार एक उत्सव बन गया है। आगामी 16, 17, 18 अप्रैल की तिथियां भारतीय इतिहास में गौरवमयी स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होने जा रही हैं। साल 2026 का बैसाखी का त्योहार एक नव पर्व के रूप में पल्लवित हो रहा है। ऐसा लग रहा था विधायिका में महिला सहभागिता का अवसर 2034 के चुनाव के साथ अवतरित होगा। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की समसामयिक पहल से यह अवसर 2029 में साकार हो रहा है।

आगामी मंजिल पांच साल पहले आ रही है। चाव से भरी हुई देश की नारी शक्ति को बधाई! पंजाबी में एक फिल्म है—गोडे गोडे चाव। इस फिल्म की केंद्रीय कथा महिलाओं के पहली बार बारात चढ़ने की है। बारात में जाने में जब वे सफल होती हैं तब जिस चाव से उनके कदम उठ रहे हैं, उसे कथाकार ने ह्यगोडे गोडे चावह्न कहा है। भारत की समस्त दल-नेत्रियों समेत जागरूक महिलाओं, महिला संगठनों व युवतियों में इस अधिनियम में सुधार तुरंत आने से वैसा ही गोडे गोडे चाव है। यानी यह चाव महिला जगत के सम्पूर्ण वातावरण में देखा जा रहा है।

महिलाओं ने हर अधिकार वर्षों के संघर्ष से पाया है। जीवन हो, पोषण हो, शिक्षा हो, सम्पत्ति में हिस्सेदारी, मताधिकार, विभिन्न नौकरियों में सहभागिता-शताब्दियों की तपस्या, संघर्ष व धैर्य से अर्जित किए। दुनिया के विभिन्न देशों, समाजों व समुदायों की अलग-अलग धाराओं में आज भी महिलाएं काफी पीछे हैं। अनेक अधिकारों से वंचित व पीड़ाओं में भी हैं। वर्षों तक मां की कोख ही कब्र बनती रही हैं। मेरे एक मित्र हैं विद्यार्थी परिषद में, 1990 के दशक में साथ काम करते थे, उन्होंने उस समय मुझे बताया उनकी भतीजी पहली बेटी है जो उनके गांव में ज़िंदा रखी गई है। मेरे लिये ये सुनना आंखें खोलने वाला था। हमारे भारत के ही एक हिस्से में ये स्थिति रही है। मैं चार बहनों, तीन बुवाओं और चार मौसियों के मध्य बड़ा हुआ था। लेकिन एक दशक पहले आधुनिक तकनीकों व पुत्र मोह की सोच से जब मां की कोख ही बेटियों के लिए कब्र बन रही थी तब हमारे बुरी तरह बिगड़े लिंगानुपात के कारण बेटियों के लिए करुणामय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हरियाणा में पानीपत की भूमि पर आकर- ह्यहम बेटियों को बचायेंह्न-इसके लिए झोली फैलाई थी।

इस करुण कथा के समानांतर भारतीय महिलाएं अपने परिश्रम से हर जगह खुद को साबित भी कर रही थीं। अंतरिक्ष में, सेना में, खेलों में, विज्ञान में, उद्यमिता में, प्रशासन मे, हर क्षेत्र में उन्होंने अपनी क्षमता प्रदर्शित की। विज्ञान, प्रौद्योगिकी व सशस्त्र बलों तक खुद को बेहतर साबित किया। विधायिका में उनकी सहभागिता अभी हाशिये पर है। वतर्मान आंकड़ों पर दृष्टिपात करें तो विधानसभाओं में महिलाओं की संख्या 9 प्रतिशत से भी कम है। जबकि 543 सदस्यों वाली लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या मात्र 14 प्रतिशत से कम है। वैश्विक स्तर पर भारत इस मामले में 140 से अधिक देशों से पीछे है।

अब समय को भारतीय नेतृत्व ने पहचान लिया है कि राजनीति में भी नारी शक्ति को उसका उचित स्थान दें। सच्चा, समावेशी और सशक्त लोकतंत्र बिना महिलाओं की समान भागीदारी के अधूरा ही रहता है। महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, बाल विकास व महिला सुरक्षा जैसे मुद्दों पर गहरी समझ रखती हैं। जब वे खुद सांसद या विधायक बनती हैं तो नीतियां कागजी नहीं, बल्कि जमीन पर उतरती हैं। पंचायतों में जहां महिलाएं सत्ता में आईं, वहां बाल विवाह घटा, लड़कियों की शिक्षा बढ़ी और घरेलू हिंसा पर अंकुश लगा। अब यही प्रभाव पूरे देश स्तर पर दिखेगा।

विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट बताती है कि लैंगिक समानता से जीडीपी में 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है। यह बिल आर्थिक विकास का इंजन बनेगा। साल 2047 में विकसित भारत के स्वप्न को भी साकार करेगा। नारी वंदन का यह फैसला केवल राजनीतिक समीकरण नहीं बदल रहा, बल्कि पूरे समाज की सोच बदल रहा है। चुनावी मैदान में महिला उम्मीदवारों की तलाश बढ़ेगी, पार्टियां उन्हें टिकट देंगी, परिवार समर्थन करेंगे और समाज सम्मान देगा। एक दिन हम गर्व से कह सकेंगेझ्रह्यभारत वह देश है जहां बेटियां न केवल घर संभालती हैं, बल्कि संसद और विधानसभाएं भी संभालती हैं।

नारी शक्ति वंदन क़ानून केवल एक अधिनियम नहीं, भारतीय समाज की उस सामूहिक चेतना का परिचायक है जो अब स्त्री-पुरुष के मध्य समानता को केवल आदर्श नहीं, वास्तविकता बनाना चाहती है। यह उस भारत की परिकल्पना है जहां माता-बहनें-बेटियां केवल घर की नहीं, राष्ट्र की भी नियति लिखेंगी। नारी शक्ति वंदन की पहल भारत की सबसे बड़ी सामाजिक न्याय की विजय है। यह बिल कह रहा हैझ्रअब इंतजार नहीं, अब हिस्सेदारी। अब महिलाएं पीछे नहीं, बल्कि आगे, बराबरी पर और नेतृत्व में होंगी।

हर भारतीय नागरिक, हर राजनीतिक दल और हर युवा को इस बिल का स्वागत करना चाहिए। क्योंकि जब नारी सशक्त होगी, तब भारत सशक्त होगा। आओ भारत की बेटियो : संसद की सीढ़ियां अब तुम्हारा भी इंतजार कर रही हैं।

लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सचिव हैं।

नकली सिर से दुश्मन को चकमा देती है ये तितली

यह कॉमन सिल्वरलाइन बटरफ्लाई है। इस तितली की विशेषता यह है कि इसका एक नकली सिर भी होता है जो पंखों के पास होता है। खतरा होने पर अपने नकली सिर से यह दुश्मनों को चकमा दे देती है। इसका वैज्ञानिक नाम सिगराइटीस वल्कानस है।

कैसा है इसका रंग-रूप?

यह छोटी सी रंगीन तितली है जिसके आगे के पंखों पर तीन गुलाबी धारियां हैं, जिनमें अलग आकार की सिल्वर रंग की आकृतियां भी हैं। मुख्यतः सभी जीवों की तरह ही इन तितलियों में भी नर अपने रूप-रंग के कारण मादा से ज्यादा आकर्षक होते हैं।

क्या है अनूठी बात?

इन तितलियों के पिछले पंखों के पास सिर के आकार की एक संरचना होती है। अपनी इस संरचना के कारण सभी परभक्षियों को ये तितलियां चकमा दे देती हैं। दरअसल, पीछे के पंखों पर छोटी-छोटी आंखों जैसी निशानियां बनी होती हैं और एक या दो जोड़ी धारीदार एन्टिना जैसी आकृति मौजूद होती है। जंतु जगत में लगभग सभी परभक्षी अपने शिकार को पीछे के पकड़ते हैं, ताकि उन्हें परेशानी ना झेलना पड़े। ऐसी स्थिति में दोनों तरफ सिर जैसे आकार के कारण ये तितली बड़ी चतुराई से शिकारी जीवों से खुद ओ बचा लेती है। यह तितली उत्तर प्रदेश, दिल्ली, मप्र, महाराष्ट्र और केरल में पाई जाती हैं।

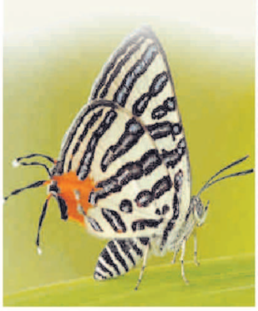

जानिए क्या होती है लड़ाकू विमानों की जनरेशन

रडार में नहीं आता है 6ठीं पीढ़ी का विमान

हाल ही में सोशल मीडिया पर चीन के लड़ाकू विमान की वीडियो काफी ज्यादा वायरल हो रही है। दावा किया जा रहा है कि यह छठीं जनरेशन यानी छठी पीढ़ी का विमान है। अभी तक दुनिया में पांचवीं जनरेशन के लड़ाकू विमान ही इस्तेमाल किए जा रहे हैं। ऐसे में विमानों में इस्तेमाल होने वाली जनरेशन यानी पीढ़ी क्या होती है।

1943 से 1955 तक पहली पीढ़ी

पहली पीढ़ी के फाइटर जेट्स में साधारण उपकरण होते थे और कोई सिक्योरिटी सिस्टम भी नहीं होता था। कुछ विमानों में सिर्फ बेसिक रडार लगाए गए थे। इनमें मशीन गन, तोप और रॉकेट लगाए जाते थे। इन्हें इंटरसेप्टर के तौर पर इस्तेमाल किया जाता था और ये सिर्फ नजदीकी लड़ाई के लिए सक्षम थे। ये विमान ज्यादातर दिन के समय ही उड़ सकते थे।

1950 से 1960 तक दूसरी पीढ़ी

दूसरी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों में मजबूत इंजन और आफ्टरबर्नर लगे थे, जिससे ये सुपरसोनिक रफ्तार (आवाज की गति से तेज) से उड़ने में सक्षम हो गए थे। इन विमानों में बेहतर रडार सिस्टम लगाए गए, जिससे पायलट लक्ष्य को दूर से देख और ट्रैक कर सकते थे। इन विमानों में एयर-टु-एयर मिसाइलों का भी इस्तेमाल किया गया था।

1960 से 1970 तक तीसरी पीढ़ी

तीसरी पीढ़ी के विमान बेहतर गाइडेड मिसाइल्स (जैसे एयर-टु-एयर और एयर-टु-ग्राउंड) का इस्तेमाल कर सकते थे। तीसरी पीढ़ी के विमानों को किसी भी मौसम में ऑपरेशन के लिए डिजाइन किया गया था। ये लंबी दूरी तक उड़ान भर सकते थे और टैंकर विमानों से हवा में ईंधन भरने में सक्षम थे।

1970 से 1990 तक चौथी पीढ़ी

चौथी पीढ़ी के लड़ाकू विमान क्रांतिकारी बदलाव के प्रतीक बने। इन विमानों को फ्लाई-बाय-वायर सिस्टम ने ज्यादा फुर्तीला बनाया और पायलट को बेहतर कंट्रोल सिस्टम दिया। विमानों में पारंपरिक गेज की जगह डिजिटल डिस्प्ले और हेड-अप डिस्प्ले का इस्तेमाल किया गया था। चौथी पीढ़ी के विमान दुश्मन के विमानों और मिसाइलों को ट्रैक करने में सक्षम थे।

21वीं सदी से अब तक पांचवी पीढ़ी

5वीं पीढ़ी के विमान 21 वीं सदी की हवाई जंगों के लिए तैयार किए गए विमान हैं। पांचवी पीढ़ी के विमान उन्नत स्टेल्थ तकनीक, नेटवर्क केंद्रित जंगी सिस्टम के लिए जाने जाते हैं। पांचवीं पीढ़ी के विमानों में उन्नत सेंसर फ्यूजन तकनीक का इस्तेमाल होता है। इसमें विभिन्न सेंसरों और रडारों से मिलने वाले डेटा को एक साथ मिलाकर पायलट को सटीक चित्र प्रदान किया जाता है।

चीन का छठी पीढ़ी का जे-36 लड़ाकू विमान

चीन के नए लड़ाकू विमान जे-36 की सबसे खास बात इसका त्रिकोणीय आकार है, जिसमें पूंछ नहीं है। यह डिजाइन विमान को दुश्मन के रडार से बचाने में मदद करता है। इसमें तीन ताकतवर टर्बोफैन इंजन लगे हैं, जो इसे अत्यधिक ऊंचाई और तेज रफ्तार से उड़ने की क्षमता देते हैं। इसमें लगे विशेष साइड-लुकिंग एयरबोर्न रडार इसे दुश्मन की नजरों से बचकर जासूसी करने और युद्ध में बड़ा फायदा पहुंचाते हैं।

पुर्तगाल में है दुनिया का सबसे लंबा पैदल सस्पेंशन ब्रिज

पुर्तगाल के अरौका जियोपार्क में है है दुनिया का सबसे लंबा पेडेस्ट्रियन सस्पेंशन ब्रिज। इस ब्रिज का नाम 516 अरौका है। ब्रिज की लंबाई 516 मीटर है, जबकि नदी से इसकी ऊंचाई 577 फीट यानी 176 मीटर है। यह ब्रिज पायवा नदी के ऊपर बना है। ब्रिज से पाविया गॉर्ज और अगुइएरास नाम के झरने दिखाई देते हैं। इस पुल का निर्माण जियोपार्क में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। ताकि यहां आने वाले पर्यटक ब्रिज पर खड़े होकर आसपास के प्राकृतिक नजारों का आनंद ले सके। ब्रिज का डिजाइन इटेकन्स कंपनी के के द्वारा किया गया गया है। कंपनी का कहना है कि यह ब्रिज तिब्बत शैली के ब्रिज की तरह डिजाइन किया गया है। ब्रिज को आम जनता के लिए 2021 में खोला गया था। इस ब्रिज पर चलने के लिए प्रतिव्यक्ति 1200 रुपए खर्च करने पड़ते हैं।

इमोत्सकी: 25 हजार आबादी, 13 हजार से ज्यादा मर्सिडीज कारें

क्रो एशिया के इमोत्सकी को 'सिटी ऑफ मर्सिडीज' के नाम से जाना जाता है। दरअसल यहां की आबादी 25 हजार है और इनके पास करीब 20 हजार कारें रजिस्टर्ड हैं। इनमें से करीब 13 हजार कारें मर्सिडीज हैं। यहां तक कि स्थानीय ड्राइविंग स्कूल में भी लोगों के पास मर्सिडीज कारें ही रहती हैं। लोगों के मर्सिडीज प्रेम को देखते हुए यहां मर्सिडीज का एक विशाल स्कल्पचर भी तैयार किया गया है। दरअसल 1960-70 के दशक में यहां के अधिकांश लोग काम के सिलसिले में जर्मनी जाया करते थे। वहां से लौटने के बाद लोग मर्सिडीज लेकर आते थे। ये शहर की परंपरा बन गई थी। इसलिए अब मर्सिडीज इमोत्सकी के लोगों की सफलता का प्रतीक मानी जाती है।

कनाडा में है दुनिया की सबसे बड़ी कार पार्किंग

वेस्ट एडमोंटन मॉल, जो कनाडा का सबसे बड़ा मॉल है। इसी मॉल में दुनिया की सबसे बड़ी पार्किंग है। यह पार्किंग 1981 में शुरू की गई थी। इस पार्किंग में लगभग 20,000 वाहनों को रखने की क्षमता है। इस विशाल पार्किंग का निर्माण मॉल की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने और यहां आने वाले लोगों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए किया गया था। वहीं दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी पार्किंग अमेरिका के सिएटल में स्थित सी-टैक मॉल में है, जहां 13 हजार वाहन खड़े किए जा सकते हैं।

रानी की वाव बावड़ी में 500 से ज्यादा तराशी गईं मूर्तियां

विश्व विरासत सूची में शामिल है इसका नाम

हमारे देश में भी कई ऐसे अद्भुत स्थल हैं, जिन्हें देखकर पर्यटक आश्चर्य से भर जाते हैं। गुजरात के पाटन में स्थित रानी की वाव की अनूठी शिल्पकला को देखने दुनियाभर से लोग आते हैं। इस अनोखी बावड़ी में की गई मूर्तियों की भव्य नक्काशी इसे बेजोड़ बनाती है। यही कारण है कि इस जगह को यूनेस्को की प्रतिष्ठित विश्व विरासत स्थलों की सूची में भी शामिल किया जा चुका है।

कब बनी, किसने बनाई

इस 7 मंजिला बावड़ी का निर्माण 1022 से 1063 ई. की अवधि में तत्कालीन राजवंश की रानी उदयमति ने पति भीमदेव की याद में करवाया था। यह बहुमूल्य धरोहर 7 शताब्दियों तक गाद में दबी रही। इसके बाद पुरातत्व विभाग ने अनूठे ढंग से संरक्षित किया है।

क्यों है यह विश्व प्रसिद्ध

रानी की वाव या बावड़ी में 500 से ज्यादा बड़ी मूर्तियां और 1 हजार से ज्यादा छोटी मूर्तियां हैं। इस वाव का निर्माण मारू-गुर्जरा वास्तुकला की स्टाइल में बहुत खूबसूरत तरीके के साथ किया गया है। इमारत में एक हजार से भी ज्यादा छोटे-बड़े स्कल्पचर हैं। इस वाव में 30 किमी लंबी रहस्यमयी सुरंग भी निकली है, जो पाटण के सिद्धपुर में जाकर खुलती है। इस खुफिया रास्ते का इस्तेमाल राजा और उसका परिवार युद्ध के वक्त कर सकता था। इसकी सीढ़ियों की कतारों की संख्या कभी 7 हुआ करती थी, जिसमें से 2 अब विलुप्त हो चुकी हैं। इमारत की दीवारों और खंभों पर पौराणिक पात्रों को बहुत खूबसूरती के साथ तराशा गया है।

- 64 मीटर लंबी, 20 मीटर चौड़ी 27 मीटर गहरी है बावड़ी।
- 22 जून 2014 को ये जगह विश्व विरासत सूची में शामिल हुई।

इन्फ्लूएंसर्स को लेकर एक्टर्स का गुस्सा जायज

साउथ दिल्ली वाली आंटी की मिमिक्री करके सोशल मीडिया स्टार बनी इंफ्लूएंसर कुशा कपिला अब ऐक्टिंग की दुनिया में रम चुकी हैं। 'थैंक यू फॉर कमिंग' और 'सुखी' जैसी फिल्मों में नजर आ चुकीं कुशा इन दिनों वेब सीरीज 'मामला लीगल है 2' को लेकर चर्चा में हैं।

जैसी जिंदगी जी, वैसे ही जीना चाहूंगी

सोशल मीडिया स्टार्स की जिंदगी अक्सर एक खुली किताब होती है, जिसके चलते उन्हें जजमेंट, ट्रोलिंग भी झेलनी पड़ती है। कुशा को भी डिवॉर्स से अपने बिजनेस से जुड़े पोस्ट पर ट्रोल किया गया है। इन चीजों को वह कैसे लेती हैं? इस बारे में उनका कहना है, 'असल में निजी जिंदगी को कितना निजी रखना है, यह आप काम करते-करते सीखते हैं। लोग अक्सर ये भूल जाते हैं कि क्रिएटर्स भी उनके बीच से ही आए हैं। हम किसी बैकग्राउंड से नहीं आए हैं। हमको ये लगा कि हम कैमरे पर कुछ कर सकते हैं। खुद ही एडिट करके, अलग-अलग किरदार निभा सकते हैं तो शुरुआती जोश में हम बह भी जाते हैं और उसे मैं गलती नहीं बोलूंगी। आप किसी आर्टिस्ट को भी देखें तो अपने शुरुआती सालों में वे निडर होते हैं। फिर थोड़े-थोड़े बैरिकेड्स लगाने लगाते हैं।

हम क्रिएटर्स की पहली पीढ़ी हैं तो हम भी उस मुकाम पर खड़े हैं

इन दिनों फिल्म इंडस्ट्री में टैलंट के बजाय सोशल मीडिया फॉलोअर्स देखकर कास्टिंग करने को लेकर भी बहस चल रही है। कई ऐक्टर्स इस पर ऐतराज भी जता चुके हैं। कुशा इस पर ऐक्टर्स को सपोर्ट करते हुए कहती हैं, 'ऐक्टर्स का यह गुस्सा बिल्कुल जायज है कि किसी क्रिएटर या इन्फ्लूएंसर्स को केवल मार्केटिंग के लिए हायर किया गया है। इस पर मैं ऐक्टर्स के साथ हूं, लेकिन ये भी हो सकता है कि कुछ क्रिएटर्स ऐक्टिंग में आना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि अपने पांच सेकंड, 15 सेकंड के रील से ज्यादा कुछ बनाए। आप देखें तो हम एकदम शुरुआती क्रिएटर्स में से हैं। हम क्रिएटर्स की पहली पीढ़ी हैं तो हम भी उस मुकाम पर खड़े हैं कि आगे क्या करना है। ऐसे में, हममें से कुछ लोगों का बहुत ही नैचरल महत्वाकांक्षा ऐक्टर बनना हो सकती है तो आपको एक कदम पीछे लेकर सोचना चाहिए कि आप किस तरह के रोल, कैसे प्रॉजेक्ट करना चाहेंगे। आप एक-दो साल जाकर सीखिए। वर्कशॉप कीजिए, ऑडिशन कीजिए। फेल होइए। मुझे मुंबई आए तीन साल हो गए और मैंने बहुत शांति से सीख रही हूं। मैंने वो प्रक्रिया शुरू कर दी है और इसमें लग जाएंगे बीस-पच्चीस साल।

राका सिर्फ एक फिल्म नहीं, मेरे भीतर सालों से पल रहा एक हिस्सा है

भारतीय सिनेमा को कई ब्लॉकबस्टर दे चुके फिल्मकार एटली कुमार, अब अपनी आगामी फिल्म राका के साथ एक बेहद निजी और भावनात्मक सफर पर निकल चुके हैं। हालांकि फिल्म के टाइटल अनाउंसमेंट के बाद से ही वे एक बार फिर जबरदस्त चर्चा का विषय बन गए हैं, लेकिन इस प्रोजेक्ट को ख़ास बनाती हैं, इससे जुड़ी उनकी भावनाएं।

'राका' के सफर के बारे में बात करते हुए एटली कुमार कहते हैं, 'राका सिर्फ एक फिल्म नहीं है... ये मेरे अंदर का वो हिस्सा है जिसे मैंने सालों तक संभालकर रखा। 18 साल तक मैं एक आइडिया से जुड़ा रहा, उसे कभी फीका नहीं पड़ने दिया। इसने मुझे परखा, मुझे गढ़ा, और हर दौर में मेरे साथ रहा। और सच कहूं... 'राका' के साथ ये तो बस शुरुआत है।' गौरतलब है कि 'राका' से जुड़ा उनका यह बयान उनके क्रिएटिव प्रोसेस की एक झलक देता है, जहां सिर्फ भव्यता ही नहीं, बल्कि गहरी भावनाएं भी शामिल हैं। हालांकि बीते वर्षों में एटली ने अपने कलाकारों को दमदार और करियर-डिफाइनिंग किरदारों में पेश करने की पहचान बनाई है, साथ ही ऐसे बड़े एंटरटेनर्स दिए हैं, जो हर तरह के दर्शकों से जुड़ते रहे हैं।

फिलहाल 'राका' के साथ वह इस विजन को एक नए स्तर पर ले जा रहे हैं, जहां इमोशन, स्केल और कहानी का संगम एक ग्लोबल ऑडियंस को ध्यान में रखकर रचा गया है। सिर्फ यही नहीं 'राका' अल्लू अर्जुन के साथ उनकी बहुप्रतीक्षित साझेदारी भी है, जिसमें वे एक अवतार में नजर आनेवाले हैं। अपने ऑन-स्क्रीन प्रेजेंस को लगातार नया रूप देने के लिए मशहूर अल्लू अर्जुन और एटली की जोड़ी ने 'राका' को पहले ही सबसे ज्यादा इंतजार की जाने वाली फिल्मों में शामिल कर दिया है। हालांकि मेकर्स ने फिल्म से जुड़ी कई जानकारियां अभी तक छिपाकर रखी हैं, लेकिन टाइटल अनाउंसमेंट ने ही इस दुनिया को लेकर दर्शकों में जबरदस्त जिज्ञासा पैदा कर दी है। अगर एटली की बातों पर भरोसा किया जाए, तो 'राका' सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि सालों की मेहनत और विज़न का नतीजा है, जो अब सबसे बड़े मंच पर सामने आने को तैयार है। और जैसा कि एटली कुमार कहते हैं, यह तो बस शुरुआत है।

राका बनकर डराएंगे अल्लू अर्जुन!

साथ होंगी दीपिका पादुकोण

साउथ के बेहतरीन एक्टर अल्लू अर्जुन ने अपने जन्मदिन पर अपने फैंस को तोहफा दिया है। मेकर्स के साथ मिलकर उन्होंने अपनी अपकमिंग फिल्म का नाम और पोस्टर रिवील किया है। पहले उनकी इस फिल्म को AA22×A6 के नाम से जाना जाता था। फैंस को फिल्म का नया नाम और पोस्टर काफी पसंद आ रहा है। इस पर उन्होंने रिएक्शन दिए हैं।

क्या है फिल्म का नाम

मेकर्स ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट की है। इस पोस्ट में फिल्म का पोस्टर रिवील किया गया है। इसके साथ ही फिल्म का नाम भी बताया गया है। पोस्टर कई भाषाओं में रिलीज किया गया है। इसमें अंग्रेजी और हिंदी जैसी भाषाएं भी शामिल हैं। पोस्ट शेयर करते हुए मेकर्स ने लिखा है AA22×A6 का नाम अब राका है। खुद को सीमाओं से आगे देखने के लिए तैयार करें।' इसमें अल्लू अर्जुन, एटली और दीपिका पादुकोण को टैग किया गया है।

पोस्टर में क्या है

'राका' के पोस्टर में देखा जा सकता है कि अल्लू अर्जुन का आधा चेहरा नजर आ रहा है। अपने चेहरे को उन्होंने छुपाया है। उनके चेहरे के आगे किसी जानवर का पंजा है, जो काफी डरावना लग रहा है। उनके सर पर बाल नहीं हैं। उनकी भौहें बनी हुई हैं। उनके माथे पर एक अलग तरह का निशान है जो उन्हें एक नॉर्मल इंसान से अलग करता है।

यूजर्स ने दिए रिएक्शन

अल्लू अर्जुन की अपकमिंग फिल्म के पोस्टर पर रिएक्शन देते हुए एक फैन ने लिखा 'ये तो हॉलीवुड के टक्कर का है।' एक और यूजर ने लिखा है 'राका का इंतजार है।' एक और यूजर ने लिखा 'इंडस्ट्री का एक ही भाई, अल्लू भाई।' एक और यूजर ने लिखा 'वाव क्या पोस्टर है।'

फिल्म की स्टारकास्ट

अल्लू अर्जुन की अगली फिल्म 'राका' का निर्देशन एटली कर रहे हैं। इस फिल्म में उनके साथ लीड रोल में दीपिका पादुकोण होंगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें रश्मिका मंदाना, मृणाल ठाकुर, जान्हवी कपूर और राम्या कृष्णन नजर आ सकती हैं।

सलमान खान के राइट हैंड बनेंगे राजपाल यादव!

भाईजान की अगली एक्शन फिल्म में हुई एक्टर की एंट्री

अपनी कॉमेडी से दर्शकों का दिल जीतने वाले राजपाल यादव बीते कुछ दिनों से लगातार सुर्खियों में हैं। चेक बाउंस से जुड़े एक मामले में उन्हें तिहाड़ जेल में आत्मसमर्पण करना पड़ा था। फिलहाल उन पर कर्ज है। इस बीच बीते दिनों एक अवॉर्ड शो में कथित तौर पर उनका मजाक उड़ाया गया था। इसके बाद सलमान खान ने सोशल मीडिया पोस्ट शेयर कर राजपाल यादव को सपोर्ट किया था। भाईजान ने अब राजपाल के प्रति एक बार फिर दरियादिली दिखाई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक सलमान खान की अगली फिल्म में राजपाल यादव की एंट्री हो गई है।

सलमान खान इन दिनों अपनी वॉर ड्रामा फिल्म 'मातृभूमि' को लेकर सुर्खियों में हैं। इस फिल्म के बाद वे निर्माता दिल राजू और निर्देशक वामशी पेडिपल्ली के साथ एक्शन फिल्म में काम करेंगे। फिल्म का नाम फिलहाल तय नहीं है। इसमें सलमान के साथ नयनतारा नजर आएंगी। वहीं, फिल्म की कास्ट में एक नए नाम के जुड़ने की अटकलें भी हैं। राजपाल यादव को फिल्म में लिया गया है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, सलमान खान ने कथित तौर पर राजपाल यादव को अपनी अगली एक्शन एंटरटेनर फिल्म में एक अहम किरदार निभाने के लिए साइन किया है। पहले भी साथ काम कर चुके हैं सलमान और राजपाल यादव सलमान की अगली फिल्म को लेकर रिपोर्ट में दावा किया गया है कि राजपाल यादव इस फिल्म में सलमान खान के राइट हैंड बने दिखेंगे। कहानी में दोनों के बीच कमाल की केमिस्ट्री देखने को मिलेगी। रिपोर्ट में आगे यह भी कहा गया है कि सलमान, राजपाल को खास तौर पर पसंद करते हैं और उनका मानना है कि इस रोल के लिए राजपाल एकदम सही हैं। बता दें कि राजपाल यादव और सलमान को पहले भी 'मुझसे शादी करोगी' और 'पार्टनर' जैसी फिल्मों में साथ देखा गया है। अब दोनों को एक बार फिर साथ देखना दिलचस्प होगा। हालांकि, अभी इसकी आधिकारिक रूप से पुष्टि नहीं हुई है।

बता दें कि बीते दिनों एक अवॉर्ड कंट्रोवर्सी के बाद सलमान खान ने सोशल मीडिया पर राजपाल यादव की खुलकर तारीफ की और अपना समर्थन जताया था। उन्होंने अपने एक्स अकाउंट से पोस्ट शेयर किया था और लिखा, 'राजपाल भाई आप 30 साल से काम कर रहे हो और हम सबने आपको रिपीट किया है बार-बार, क्योंकि आप अपना काम जानते हों और एक वैल्यू लाते हो।

अंदाजा नहीं था कि 'एसके सर' इतना बड़ा चेहरा बनेगा, 'एस्पिरेंट्स' की सफलता पर बोले अभिलाष थपलियाल

लॉकडाउन के दौरान आई सीरीज 'एस्पिरेंट्स' ने पहले ही सीजन से ऑडियंस के बीच जबरदस्त पहचान बना ली थी। 'एसके सर' का किरदार आज भी लोगों के बीच काफी पॉपुलर है। 'अमर उजाला' से खास बातचीत में 'श्वेतकेतु' यानी अभिलाष थपलियाल ने बताया कि 'एस्पिरेंट्स' की सफलता के बाद अब कलाकारों की अपनी-अपनी वैनिटी वैन हो गई है। बातचीत में उन्होंने तापसी पन्नू, अनुराग कश्यप, रेडियो और अपने सफर को लेकर भी कई दिलचस्प बातें साझा कीं।

'मुझे बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि 'एसके सर' इतना बड़ा हो जाएगा'

जब हम एस्पिरेंट्स का पहला सीजन कर रहे थे, तब मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि 'एसके सर' इतना बड़ा चेहरा बन जाएगा। बस इतना पता था कि कहानी बहुत अच्छी है और UPSC की दुनिया पर आधारित है। उस समय यह बिल्कुल नहीं लगा था कि यह सीरीज लोगों के बीच इतनी गहराई से जुड़ जाएगी। हमें तो यह भी नहीं पता था कि शो किस प्लेटफॉर्म पर आएगा। बाद में यह यूट्यूब पर रिलीज हुआ और लॉकडाउन के दौरान लोगों ने इसे खूब देखा। शायद यही वजह रही कि एस्पिरेंट्स धीरे-धीरे लोगों की जिंदगी का हिस्सा बन गया। आज भी एयरपोर्ट, कॉलेज या कहीं भी जाऊं, लोग मुझे 'एसके सर' कहकर बुलाते हैं।

'मैं जमीन पर नागिन डांस कर रहा था... और एक सेकंड को लगा कि मैं फिट नहीं हूं'

पहले दिन सेट पर माहौल बहुत हल्का-फुल्का था। मैं तो मस्ती में जमीन पर नागिन डांस कर रहा था और सब हंस रहे थे। लेकिन उसी बीच एक ऐसा मजेदार और थोड़ा टफ मोमेंट भी आया, जो आज भी याद है। नवीन (को स्टार नवीन कस्तूरिया) ने मजाक-मजाक में डायरेक्टर से कहा, 'ये एसके लग नहीं रहा, किसी और को ट्राय करो।' अब वो मजाक था, लेकिन एक पल के लिए मुझे सच में लगा कि यार, कहीं मैं फिट तो नहीं बैठ रहा? ऐसे मोमेंट्स आपको और मेहनत करने के लिए धक्का देते हैं। बाद में वही किरदार लोगों को इतना पसंद आया कि आज सब मुझे 'एसके सर' के नाम से जानते हैं। मेरे लिए सबसे बड़ा चैलेंज था अपनी भाषा और लहजे पर काम करना। मुझे एक ऐसे लड़के को निभाना था जो बिहार से है, लेकिन दिल्ली में रहकर पढ़ाई कर रहा है। उसमें बैलेंस बनाना था कि वो पूरी तरह देहाती भी न लगे और पूरी तरह शहरी भी नहीं। हमने इस पर काफी मेहनत की। 'सबसे बड़ा बदलाव बस इतना आया कि अब सबकी अपनी-अपनी वैनिटी वैन है'

तापसी बहुत पुरानी दोस्त है... लेकिन ..'

तापसी का सपोर्ट मेरे लिए अलग इसलिए था, क्योंकि वो मेरी बहुत पुरानी दोस्त है। हम दोनों जब मुंबई में नए थे, तब से एक-दूसरे को जानते हैं। लेकिन दोस्ती से हटकर भी, एक कलाकार के तौर पर मैं उन्हें बहुत मानता हूं। उन्होंने हमेशा अलग और दमदार काम चुना है। ऑफ स्क्रीन भी वो वैसी ही हैं। बहुत साफ, बहुत सीधी। इंडस्ट्री में अगर मेरे करीबी दोस्तों की बात होगी, तो तापसी उनमें जरूर होंगी। मुझे पता है कि अगर मैं कभी उलझूं, तो वो मुझे घुमा-फिराकर नहीं, सीधी बात ही कहेंगी।

'पहली मुलाकात में ही मैंने कह दिया था कि मैं फिल्म छोड़ देता हूं'

तापसी पन्नू के साथ मेरी पहली ठीक-ठाक मुलाकात भी किसी फिल्मी सीन से कम नहीं थी। यह 'दिल जंगली' की शूटिंग के दौरान हुआ, जब हम लंदन में थे। उस वक्त मैं नया था, छोटे-छोटे काम कर रहा था, रेडियो और स्केचेज की दुनिया से आ रहा था। तापसी उस फिल्म में भी अपने किरदार को लेकर बहुत सीरियस थीं। वह उन एक्टर्स में से हैं जो अपने रोल के लिए जो भी करना पड़े, वह करती हैं। उस फिल्म के लिए उन्होंने अपने लंबे बाल कटवा लिए थे। अब हुआ ये कि एक दिन वह सामने आई और अचानक मुझसे पूछने लगीं, 'तुमने देखा? मैंने बाल कटवा लिए, कुछ बोलोगे नहीं?' और फिर न जाने कैसे बात मजाक से बहस में बदल गई। वह मुझे डांटने लगीं, मैं भी पलटकर जवाब देने लगा। कुछ ही देर में हम दोनों एक-दूसरे पर ऊंची आवाज में बात कर रहे थे।

'मुझे भी लंबे समय तक 'हीरो के दोस्त' वाले रोल मिलते रहे'

हमारी इंडस्ट्री की एक दिक्कत ये है कि वो बहुत जल्दी आपको एक खाने में डाल देती है। ये हीरो है, ये हीरो का दोस्त है, ये विलेन है, ये अमीर है, ये गरीब है... बस फिर उसी हिसाब से रोल आने लगते हैं। मेरे साथ भी ऐसा हुआ। शुरुआत में मुझे भी अक्सर 'हीरो के दोस्त' वाले रोल मिलते थे। दिक्कत रोल से नहीं होती, दिक्कत तब होती है जब लोग मान लेते हैं कि तुम बस इतना ही कर सकते हो। फिर धीरे-धीरे आपको खुद ही समझाना पड़ता है कि नहीं, मैं इससे ज्यादा भी कर सकता हूं। असली लड़ाई वहीं से शुरू होती है। क्योंकि लोग आपको जिस नजर से देखते हैं, जरूरी नहीं कि आप सच में वही हो।

आईपीएल 2026 में 20 में से 20 बार 200 से ज्यादा का स्कोर

पावरप्ले में रन वर्षा, पांच बार 20 से कम गेंदों पर अर्धशतक

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में 20 मैच हो गए हैं और आंकड़े बताते हैं कि यह अबतक का सबसे विस्फोटक बल्लेबाजी वाला सीजन रहा है। 200 का आंकड़ा आम हो गया है। 20 मैच में 20 बार 200 से ज्यादा का स्कोर बना है। इतनी आसानी से 200 रन बनने का कारण ज्यादा छक्के लगने है। आईपीएल 2026 में छक्के लगने की दर 12.24 है। यानी लगभग हर 13 गेंद पर एक छक्का लग रहा है।

बल्लेबाज पावरप्ले का ज्यादा से ज्यादा से फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। यही कारण है कि 5 बार बल्लेबाज अर्धशतक 20 से कम गेंद पर लगा चुके हैं। आईपीएल में पहली बार 20 मैचों के बाद रन रेट 10 रन प्रति ओवर तक पहुंच गया है। इससे पहले किसी सीजन में 20 मैच के बाद सबसे ज्यादा रन रेट 2025 में 9.52 था। रनरेट में इजाफे का कारण पावरप्ले में विस्फोटक बल्लेबाजी हैं।

- **अंत के ओवरों में रनरेट गिरा-** मिडिल-ओवर का रन रेट भी बढ़ा है, लेकिन 14 प्रतिशत से थोड़ा कम। अंत के ओवरों में रनरेट गिरा है। यह 10 रन प्रति ओवर से थोड़ा ज्यादा है। पिछले चार सालों में डेथ ओवर और पावरप्ले के बीच रन रेट में अंतर कम से कम दो रन प्रति ओवर था। इस साल यह घटकर आधा रन प्रति ओवर रह गया है। 2022 में डेथ ओवर्स में रन रेट 11.57 था। 2026 में यह 10.44 है। 2024 में 11.54, 2023 में 11.2 और 2025 में 11.39 था।
- **200 से ज्यादा का स्कोर 5 बार हासिल-** बल्लेबाजों के दबदबे का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कितनी आसानी से 200 से ज्यादा का लक्ष्य हासिल किया गया है। पिछले साल पहले 20 मैच में 11 बार 200 से ज्यादा का स्कोर बना था। इस बार 20 बार 200 से ज्यादा का स्कोर बना है। पहले बैटिंग करने वाली टीमों ने 18 पारी में 11 बार इसे हासिल किया है। इससे भी ज्यादा खास बात यह है कि बाद में बैटिंग करने वाली टीमों के लिए लक्ष्य तक पहुंचना काफी नॉर्मल हो गया है।

10 रन प्रति ओवर

आईपीएल इतिहास में पहली बार

आईपीएल 2026 में पहले 20 मैचों के बाद रन रेट 10.00 रन प्रति ओवर तक पहुंचा है। यह किसी भी सीजन में 20 मैच के बाद का अबतक का सर्वोच्च रन रेट है। इससे पहले यह रिकॉर्ड 2025 का था, जब रन रेट 9.52 था। पावरप्ले में विस्फोटक बल्लेबाजी इस बदलाव की सबसे बड़ी वजह है।

पांच बार 20 से कम गेंदों पर अर्धशतक- आईपीएल 2026 में बल्लेबाज काफी तेजी से अर्धशतक तक पहुंच रहे हैं। अबतक 48 पचासे लगे हैं। पांच अर्धशतक 20 से कम गेंदों पर लग गए हैं।

भारत के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए

दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम घोषित

मचेके को पहली बार मिला मौका

डरबन (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका ने भारत के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए 15 सदस्यीय महिला टीम का एलान किया है। विकेटकीपर बल्लेबाज टेबोगो मचेके को पहली बार अंतरराष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया, जबकि ऑलराउंडर एलिज मारी मार्क्स की टीम में वापसी हुई है। दोनों देश 17 से 27 अप्रैल के बीच पांच टी20 मुकाबलों की सीरीज खेलेंगे।

सीरीज का कार्यक्रम

भारत और दक्षिण अफ्रीका की महिला टीमों के बीच टी20 सीरीज के शुरुआती दो मैच 17 और 19 अप्रैल को डरबन में खेले जाने हैं। इसके बाद 22 और 25 अप्रैल को जोहानिसबर्ग अगले दो मुकाबलों की मेजबानी करेगा। सीरीज का अंतिम मैच बेनोनी में 27 अप्रैल को आयोजित होगा। टेबोगो मचेके ने कराबो मेसो की जगह ली है, जो कलाई की चोट के कारण टीम से बाहर हैं। वहीं, एलिज ने तेज गेंदबाज मसाबाता क्लास का स्थान लिया है। इस टीम की कप्तानी एल, वोलवार्ड्ट करेंगी। एनीके बॉश ने घायल डेन वैन नीकेर्क की जगह टीम में अपना स्थान बरकरार रखा है। अनुभवी तेज गेंदबाज ऑलराउंडर मारिजेन कैप अभी भी टीम के लिए उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि वह अपनी बीमारी से उबरने की प्रक्रिया में हैं।

- **भारत के खिलाफ सीरीज के लिए दक्षिण अफ्रीका की महिला टीम –** एल. वोलवार्ड्ट (कप्तान), एनेके बॉश, तजमिन ब्रिट्ज, नादिने डि क्लर्क, एनेरी डर्कसेन, अमांडा हलुबी, सिनालो जाफ्टा, अयाबोंगा खाका, सुने लुस, टेबोगो माचेके, एलिज-मारी मार्क्स, नॉनकुलुलेको म्लाबा, कायला रेनेके, तुमी सेखुखुने और क्लो ट्रायोन।

फ़ीडे कैंडिडेट शतरंज राउंड 11

वैशाली नें रूस की गोर्याचकिना को हराया, खिताब की और कदम

साइप्रस (एजेंसी)। फ़ीडे महिला कैंडिडेट शतरंज से भारत के लिए बड़ी खबर आ रही है, भारत की आर वैशाली नें बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए आज हुए 11वें राउंड में रूस की अलेक्जेंड्रा गोर्याचकिना को केल मोहरो से एंडगेम में सटीक खेल से पराजित कर दिया, केल मोहरो से खेल रही वैशाली नें गोर्याचकिना के हाथी को अपनी शातिर चालों से कुछ यूँ फसाया की गोर्याचकिना को अपना हाथी ऊँट के बदले देना पड़ा और फिर वैशाली नें अपने राजा घोड़े और बच्चे हुए हाथी से मिलकर खेल को 45 चालों में अपने नाम कर लिया अब इस जीत से वैशाली 7 अंकों के साथ ना सिर्फ़ सबसे आगे बनी हुई बल्कि उनके पीछे चल रही चीन की जू जिनर और यूक्रेन की अन्ना मुज्यचुक से उनकी बढ़त 1 अंक की हो गई है, जू को आज भारत की आर वैशाली नें ड्रा पर रोक लिया जबकि अन्ना नें रूस की लग्नों कैटरिना से ड्रा खेला, वैशाली को अब बचे हुए तीन राउंड में चीन की जू जिनर, तान झोंगायी और रूस की लग्नों कैटरिना से मुकाबला खेलना है।

आयरलैंड दौरे पर जाएंगे वैभव सूर्यवंशी?

- **चयनकर्ताओं ने किया शॉर्टलिस्ट, डेब्यू कर तोड़ सकते हैं सचिन का रिकॉर्ड**

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट के स्टार युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आ रही है। अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति ने विशेषज्ञों की लगातार मांग और आईपीएल 2026 में वैभव के विस्फोटक प्रदर्शन को देखते हुए उन्हें टीम इंडिया में शामिल करने का मन बना लिया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक जून में होने वाले आयरलैंड दौरे के लिए वैभव का नाम शॉर्टलिस्ट किया गया है।

टूट जाएगा सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड

अगर वह इस दौरे पर डेब्यू करते हैं तो वह भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बन जाएंगे और सचिन तेंदुलकर (16 साल की उम्र में डेब्यू) का ऐतिहासिक रिकॉर्ड तोड़ देंगे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने मीडिया से बात करते हुए कहा वैभव आयरलैंड दौरे के लिए दौड़ में बने हुए हैं और सेलेक्टर्स ने कई अन्य खिलाड़ियों के साथ उनके नाम को भी शॉर्टलिस्ट किया है।

वैभव सूर्यवंशी को आजमाना चाहता है बोर्ड

सेलेक्टर्स की इस योजना से साफ है कि वे इस राजस्थान रॉयल्स के युवा बल्लेबाज को इंतजार करो और देखो की नीति के बजाय सीधे सीनियर टीम में फास्ट-ट्रैक करना चाहते हैं। आयरलैंड जैसी तुलनात्मक रूप से कम चुनौतीपूर्ण टीम के खिलाफ मौका देकर बोर्ड वैभव की प्रतिभा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परखना चाहता है। वैभव सूर्यवंशी की दावेदारी को आईपीएल चेयरमैन अरुण धूमल का भी पूरा समर्थन मिला है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वैभव की जमकर तारीफ करते हुए लिखा, इस आईपीएल 2026 सीजन में वैभव सूर्यवंशी द्वारा क्या शानदार बल्लेबाजी प्रदर्शन देखने को मिला है। अपनी प्रतिभा और प्रदर्शन को देखते हुए यह विलक्षण बालक निश्चित रूप से भारत के लिए सबसे कम उम्र में डेब्यू करने का हकदार है। इतनी कम उम्र में इतना प्रतिभाशाली खिलाड़ी मिलना दुर्लभ है।

आईपीएल से मिली वैभव सूर्यवंशी को पहचान

वैभव का सुर्खियों में आने का सफर आईपीएल 2025 से शुरू हुआ था जब राजस्थान रॉयल्स ने उन्हें 1.1 करोड़ रुपये की भारी-भरकम राशि में खरीदा था। उन्होंने अपने डेब्यू मैच की पहली ही गेंद पर शार्दुल ठाकुर को छक्का जड़कर अपने इरादे साफ कर दिए थे। इसके बाद गुजरात टाइटंस के खिलाफ महज 35 गेंदों में शतक जड़कर उन्होंने पूरी दुनिया को अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया। हाल ही में अंडर-19 वर्ल्ड कप के फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ उनकी 80 गेंदों में 175 रनों की ऐतिहासिक पारी ने सेलेक्टर्स को मजबूर कर दिया कि उन्हें अब और इंतजार न कराया जाए।

आईपीएल के शेड्यूल में बदलाव, स्थानीय निकाय चुनावों के कारण दो मैचों का वेन्यू बदला

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद और गुजरात के अन्य हिस्सों में 26 अप्रैल को होने वाले नगरपालिका चुनावों का हवाला देते हुए भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने सोमवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 के कार्यक्रम में बदलाव किया। नए कार्यक्रम के अनुसार 26 अप्रैल और 21 मई को गुजरात टाइटंस और चेन्नई सुपरकिंग्स के बीच होने वाले मुकाबलों के स्थल बदल दिए गए हैं। टाइटंस और सुपरकिंग्स के बीच पहले 26 अप्रैल को अहमदाबाद में खेला जाने वाला दोपहर का मैच अब चेन्नई के एमए ??चिदंबरम स्टेडियम में होगा। यह दोपहर तीन बजकर 30 मिनट से ही खेला जाएगा। सुपरकिंग्स और टाइटंस के बीच 21 मई को शाम को होने वाला मैच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में स्थानांतरित कर दिया गया है और यह मैच शाम सात बजकर 30 मिनट पर शुरू होगा। बीसीसीआई ने विज्ञप्ति में कहा, अहमदाबाद और गुजरात के दूसरे हिस्सों में 26 अप्रैल 2026 को होने वाले नगरपालिका चुनावों को देखते हुए यह बदलाव जरूरी हो गया है।

प्रफुल्ल हिंगे ने IPL में रचा इतिहास

- **शोएब अख्तर समेत 8 खिलाड़ियों की बराबरी की**

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद ने आईपीएल 2026 के 21वें मैच में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपनी प्लेइंग 11 में प्रफुल्ल हिंगे को शामिल किया। प्रफुल्ल ने अपने डेब्यू मैच में ही फिर वो कमाल कर दिया और आईपीएल इतिहास में किसी भी खिलाड़ी ने नहीं किया था। यही नहीं प्रफुल्ल ने शोएब अख्तर समेत 4 खिलाड़ियों की बराबरी भी कर ली।

प्रफुल्ल ने पहले ओवर में 3 विकेट लिए

प्रफुल्ल हिंगे ने राजस्थान के खिलाफ पारी के पहले ही ओवर में 3 विकेट झटके और आईपीएल इतिहास में बतौर डेब्यूटेंट पहले ओवर में 3 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बने। प्रफुल्ल ने वैभव सूर्यवंशी, ध्रुव जुरेल और लुआन-ड्रे प्रिटोरियस को आउट कर राजस्थान को पूरी तरह से बैकफुट पर धकेल दिया।

सचिन का रिकॉर्ड क्लासेन ने तोड़ा

आईपीएल में पहली 50 पारियों के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले टॉप-7 बैटर

हैदराबाद। हैदराबाद के बैटर हेनरिक क्लासेन आईपीएल 2026 के 21वें मैच में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अर्धशतक से चूक गए, लेकिन अपनी टीम के लिए 26 गेंदों पर 40 रन की अहम पारी खेली और इस दौरान 3 छक्के व एक चौका भी लगाया। क्लासेन ने अपनी इस पारी के दम पर सचिन तेंदुलकर का बड़ा रिकॉर्ड तोड़ दिया।

हेनरिक क्लासेन ने तोड़ा सचिन का रिकॉर्ड- क्लासेन ने राजस्थान के खिलाफ 40 रन की पारी खेली और आईपीएल की पहली 50 पारियों के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में वो छठे नंबर पर आ गए। क्लासेन ने सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ा जो 1683 रन के साथ पहले छठे नंबर पर थे, लेकिन अब वो 7वें नंबर पर आ गए। इस लीग में पहले 50 पारियों के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में पहले नंबर पर क्रिस गेल हैं जिन्होंने 2236 रन बनाए थे जबकि दूसरे नंबर पर शॉन मार्श 1933 रन के साथ मौजूद हैं। तीसरे नंबर पर माइक हसी हैं जिन्होंने 1777 रन बनाए थे जबकि चौथे नंबर पर ऋतुराज गायकवाड़ 1771 रन बनाए हैं।

पहली 50 पारियों के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले टॉप-7 बैटर

• 2236 रन : क्रिस गेल • 1933 रन : शॉन मार्श • 1777 रन : माइक हसी • 1771 रन : ऋतुराज गायकवाड़ • 1725 रन : शेन वॉटसन • 1704 रन : हेनरिक क्लासेन • 1683 रन : सचिन तेंदुलकर

8 चौके, 6 छक्के

इशान किशन ने 200 प्लस के स्ट्राइक रेट से ठोके 91 रन

फिर भी बनाया अनचाहा रिकॉर्ड

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान इशान किशन ने आईपीएल 2026 के 21वें मैच में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ बेहतरीन बल्लेबाजी की और 44 गेंद पर 91 रन ठोके। उन्होंने अपनी पारी में 8 चौके और छह छक्के लगाए और 200 प्लस के स्ट्राइक रेट से रन ठोके, लेकिन इस मैच में वह शतक से चूक गए। इशान बेहतरीन बल्लेबाजी कर रहे थे लेकिन 9 रन पीछे रह गए अपने शतक से। उन्होंने इस बेहतरीन पारी के बावजूद हैदराबाद के लिए एक अनचाहे रिकॉर्ड की लिस्ट में एंट्री कर ली है। इशान किशन सनराइजर्स हैदराबाद के लिए 90s में आउट होने वाले तीसरे बल्लेबाज बन गए हैं। उनसे पहले इस लिस्ट में तीन बार डेविड वॉर्नर और एक बार जॉनी बेयरस्टो का नाम दर्ज है।

शेन वॉर्न की मौत के चार साल बाद बड़ा खुलासा

- **बेटे का दावा, बोले- कोविड के टीके के कारण हुई महान स्पिनर की मौत**

सिडनी (एजेंसी)। शेन वॉर्न के निधन के चार साल बाद उनके बेटे जैक्सन ने दावा किया है कि इस दिग्गज स्पिनर की मौत संभवतः कोविड के उन तीन या चार टीकों के कारण हुई थी, जो उन्हें 'काम करने के लिए मजबूरन लेने पड़े थे।' जैक्सन ने टू वर्ल्ड्स कोलाइड पॉडकास्ट पर बात करते हुए अपने पिता की स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को भी स्वीकार किया। वार्न का 2022 में थाईलैंड में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था। उस समय उनकी उम्र 52 वर्ष थी।

तिलकरत्ने दिलशान ने किए खाटूश्याम के दर्शन

जयपुर (एजेंसी)। श्रीलंका के पूर्व दिग्गज ओपनिंग बल्लेबाज तिलकरत्ने दिलशान इन दिनों अपनी आक्रामक बल्लेबाजी के लिए नहीं बल्कि अपनी आत्मिक शांति और आध्यात्मिक यात्रा के लिए चर्चा में हैं। क्रिकेट की चकाचौंध से दूर दिलशान का यह नया अवतार उनके जीवन के एक ऐसे पहलू को उजागर करता है जो आस्था और विश्वास से गहराई तक जुड़ा हुआ है। हाल ही में भारत दौरे पर आए दिलशान ने खेल के मैदान जैसी ही ऊर्जा अब भक्ति के मार्ग पर दिखाई। अपनी इस भारत यात्रा के दौरान दिलशान ने देश के प्रसिद्ध मंदिरों में मत्था टेका। असम के प्रसिद्ध कामाख्या देवी मंदिर से लेकर राजस्थान के खाटू श्याम मंदिर तक उनकी यह यात्रा पूरी तरह श्रद्धा और भक्ति के रंग में डूबी नजर आई। इंस्टाग्राम पर अपनी इन यात्राओं की तस्वीरें साझा करते हुए उन्होंने इसे एक विशेष अनुभव बताया। दिलशान ने स्वीकार किया कि इन पवित्र स्थानों की आध्यात्मिक ऊर्जा ने उन्हें भीतर से शांत कराया है।

कभी अहमद शहजाद के साथ हुआ था विवाद

दिलशान की इस भक्तिमय यात्रा ने एक पुराने विवाद को भी हवा दे दी है जो कभी पाकिस्तानी क्रिकेटर अहमद शहजाद के साथ हुआ था। एक मैच के दौरान शहजाद ने सरेआम दिलशान को धर्म परिवर्तन कर इस्लाम अपनाने की सलाह दी थी जिसे दिलशान ने बेहद मजबूती के साथ ठुकरा दिया था।

दिलशान ने बदला था अपना धर्म – बहुत कम लोग इस बात से वाकिफ हैं कि दिलशान का जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था और उनका नाम तुवान मोहम्मद दिलशान था। हालांकि, वयस्क होने पर उन्होंने अपनी स्वेच्छा से बौद्ध धर्म को अपनाया और अपना नाम बदलकर तिलकरत्ने दिलशान कर लिया। तब से वे बौद्ध धर्म के सिद्धांतों और अपनी आस्था के अनुसार ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

शानदार रहा दिलशान का करियर – तिलकरत्ने दिलशान का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट करियर शानदार रहा है जिसमें उन्होंने तीनों फॉर्मेट में अपनी विशेष छाप छोड़ी। उन्होंने श्रीलंका के लिए 17000 से अधिक अंतरराष्ट्रीय रन बनाए।

वेदांता प्लांट में मौत का धमाका

20 मजदूर जिंदा जले, 40 से ज्यादा झुलसे...लापरवाही या लालच?

विशेष संवाददाता संदीप सिंह / सक्ती

छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले के सिंघीतराई स्थित वेदांता लिमिटेड के पावर प्लांट में हुआ बॉयलर विस्फोट अब एक औद्योगिक हादसा नहीं, बल्कि सिस्टम पर बड़ा सवाल बनकर खड़ा हो गया है। मंगलवार दोपहर करीब 2:30 बजे हुए इस भीषण धमाके में अब तक 20 मजदूरों की मौत हो चुकी है, जबकि 40 से अधिक मजदूर बुरी तरह झुलसे हैं। कई की हालत 80 प्रतिशत तक जलने के कारण बेहद गंभीर बनी हुई है।

धमाका ऐसा कि कई किलोमीटर तक गूंजी आवाज- प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, यूनिट-1 में अचानक प्रेशर बढ़ा और बॉयलर का ट्यूब फट गया। कुछ ही सेकंड में खौलती भाप और पानी ने मजदूरों को अपनी चपेट में ले लिया। जो जहां था, वहीं झुलस गया–कुछ खाना खा रहे थे, कुछ मशीन के पास काम कर रहे थे।

शुरुआत में 3-4 मौत की खबर आई

शाम होते-होते संख्या 10 पार कर गई और रात से सुबह के बीच अस्पतालों में दम तोड़ते मजदूरों के साथ आंकड़ा 17 तक पहुंच गया। शव इतने बुरी तरह झुलसे हैं कि पहचान करना भी मुश्किल हो रहा है। घायलों को रायगढ़, बिलासपुर और खरसिया के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। 19 मजदूर गंभीर हालत में, 8 की स्थिति नाजुक कई 80% तक झुलसे रायपुर के बड़े अस्पतालों को भी अलर्ट पर रखा गया है।

जांच से पहले ही उठे बड़े सवाल

प्रशासनिक जांच शुरू हो गई है, लेकिन शुरुआती संकेत खतरनाक तस्वीर दिखा रहे है -मेंटेनेंस में लापरवाही? ओवरप्रेशर में बॉयलर चलाया गया? सेफ्टी सिस्टम फेल या बंद? पुरानी मशीनरी का जोखिम? यानी सवाल सीधा है–क्या उत्पादन के दबाव में मजदूरों की जान दांव पर लगाई गई?

सरकार हरकत में, लेकिन क्या काफी है?

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने मृतकों के परिजनों को 5 लाख रुपये घायलों को 50 हजार रुपये मुआवजे का ऐलान किया। साथ ही मजिस्ट्रियल जांच के आदेश और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की बात कही गई है।

परिजनों का फूटा गुस्सा

प्लांट गेट पर परिजनों ने जमकर हंगामा किया। आरोप है कि–हादसे की सूचना देर से दी गई घायलों को अस्पताल पहुंचाने में लापरवाही हुई अधिकारी और ठेकेदार मौके से गायब हो गए कई मजदूरों के लापता होने की भी आशंका जताई जा रही है।

कंपनी की चुप्पी ने बढ़ाए सवाल

हैरानी की बात यह है कि हादसे के 36 घंटे बाद भी

अनिल अग्रवाल या कंपनी की ओर से कोई स्पष्ट सार्वजनिक बयान नहीं आया है। सुरक्षा सर्वोपरि कहने वाली कंपनी की यह खामोशी खुद एक बड़ा सवाल बन गई है। यह 1200 मेगावाट का प्लांट पहले एथेना कंपनी का था, जिसे 2022 में वेदांता ने खरीदा था। आधे-अधूरे प्रोजेक्ट और पुरानी मशीनरी अब जांच के दायरे में हैं। यह हादसा सिर्फ एक दुर्घटना है या लापरवाही की कीमत? 17 मौतें सिर्फ आंकड़ा नहीं बल्कि उस सिस्टम की कहानी हैं, जहां मशीनें बच जाती हैं और मजदूर जल जाते हैं। अब नजर जांच पर नहीं, जिम्मेदारी तय होने पर है।

20 मृतकों में पांच राज्यों के लोग

1. रितेश कुमार राय, सोनबरसा भागलपुर बिहार
2. अमृत लाल पटेल, मांझापारा, टुंड्री
3. ठंडाराम लहरे, जमगहन मालखरौदा
4. तरुण कुमार ओझा, रोहराबंध, धनबाद।
5. आकिब खान, पैथन, दरभंगा बिहार।
6. सुसंता जना, वेस्ट बंगाला
7. अब्दुल करीम, बोका झारखण्ड।
8. उद्धव सिंह यादव, खरसिया।
9. शेख सईफउद्दीन, वेस्ट बंगाल।
10. पप्पू कुमार, उत्तर प्रदेश।
11. अशोक पहरे, पलामू झारखण्ड।
12. मानस गिरी, वेस्ट बंगाल ।
13. बृजेश कुमार, उत्तरप्रदेश।
14. रामेश्वर महिलाने, जांजगीर चांपा।
15. कार्तिक महतो, वेस्ट बंगाल ।
16. नदीम अंसारी, फगुरम।
17. शिवनाथ मुर्मू।
18. चितरंजन डलोई, मेदनीपुर।
19. दीपांकर सिंह, मेदनीपुर।
20. कैलाश महतो, वेस्ट बंगाल।

केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल ओराम ने जनजातीय उद्यमिता के लिए एक उत्प्रेरक बताया

रायपुर। केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल ओराम ने देश भर में अनुसूचित जनजाति समुदायों को सशक्त बनाने में राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम द्वारा निभाई गई परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा कि का दृष्टिकोण केवल रोजगार सृजन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसका लक्ष्य उद्यमिता को बढ़ावा देना और व्यक्तियों को रोजगार चाहने वाला बनने के बजाय रोजगार देने वाला बनने में सक्षम बनाना है। नई दिल्ली में के 10 अप्रैल 2026 को आयोजित 25 वें स्थापना दिवस को संबोधित करते हुए ओराम ने इस निगम को जनजातीय उद्यमिता के लिए एक उत्प्रेरक बताया।

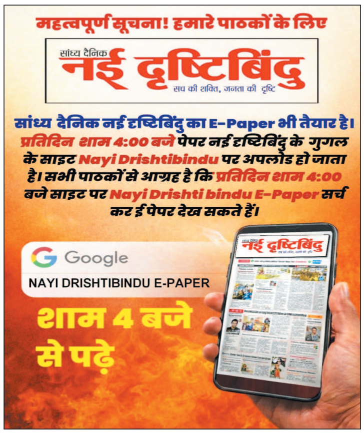

नई दृष्टिबिंदु' की खबर का बड़ा असर : निजी स्कूलों की 'फीस लूट' पर सरकार सख्त, प्रदेश भर के डीईओ से मांगी गई रिपोर्ट

निजी स्कूलों में शिक्षा या शोषण : प्ले स्कूलों की 'फीस लूट' ने बढ़ाई अभिभावकों की चिंता
विशेष रिपोर्ट : नन्हे बच्चो के कंधो पर मुनाफे का भारी बोझ

नरेन्द्र डाकलिया / राजनांदगांव-रायपुर

'नई दृष्टिबिंदु' ने खोला था मोर्चा

उल्लेखनीय है कि 'नई दृष्टिबिंदु' ने अपने 12 अप्रैल के अंक में "निजी स्कूलों में शिक्षा या शोषण : प्ले स्कूलों की 'फीस लूट' ने बढ़ाई अभिभावकों की चिंता" शीर्षक से विशेष रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इस रिपोर्ट में बताया गया था कि कैसे प्ले स्कूलों और प्री-नसर्री के नाम पर दाखिला लेते ही जेब साफ की जा रही है। साथ ही, ड्रेस, किताबों और स्टेशनरी के नाम पर स्कूलों और चुनिंदा दुकानों के बीच चल रहे 'सिंडिकेट' और कमीशनखोरी के खेल को भी उजागर किया गया था।

शिक्षा के नाम पर व्यावसायिक लूट और मनमानी फीस वसूली को लेकर सांध्य दैनिक 'नई दृष्टिबिंदु' द्वारा 12 अप्रैल को प्रमुखता से प्रकाशित समाचार पर छत्तीसगढ़ सरकार ने कड़ा संज्ञान लिया है। समाचार में उठाए गए गंभीर बिंदुओं को आधार बनाते हुए लोक शिक्षण संचालनालय छत्तीसगढ़ ने प्रदेश के समस्त संभागीय संयुक्त संचालकों और जिला शिक्षा अधिकारियों को पत्र जारी कर जवाब-तलब किया है।

शासन ने पत्र में क्या कहा?

लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी आदेश (क्रमांक/अनुदान/फीस.विनि./2026/27) में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि विभिन्न माध्यमों (समाचार पत्रों) से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि मान्यता प्राप्त निजी स्कूलों द्वारा 'फीस विनियमन अधिनियम' का पालन नहीं किया जा रहा है। शासन ने इस लापरवाही को गंभीरता से लेते हुए तीन प्रमुख बिंदुओं पर 17 अप्रैल 2026 तक अनिवार्य रूप से

लोक शिक्षण संचालनालय
छत्तीसगढ़

जानकारी मांगी है:

फीस विनियमन समिति का गठन

जिले के सभी निजी स्कूलों में फीस विनियमन समिति का गठन हुआ है या नहीं? यदि नहीं, तो उन पर अब तक क्या कार्रवाई की गई है?

बैठक और पारदर्शिता

क्या इन स्कूलों में शुल्क निर्धारण के लिए प्रतिवर्ष समिति की बैठक आयोजित हो रही है? क्या बैठक के बाद निर्धारित शुल्क का विवरण स्कूल के नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित किया जा रहा है?

विगत वर्षों का रिकॉर्ड: जिला स्तरीय शुल्क समिति द्वारा पिछले तीन वर्षों (2024-25, 2025-26, और 2026-27) में आयोजित बैठकों का पूरा ब्यौरा उपलब्ध कराया जाए।

प्रशासन की चुप्पी पर उठे थे सवाल

समाचार में इस बात पर भी जोर दिया गया था कि इंदौर जैसे शहरों में जहाँ प्रशासन धारा 163 (इठरर) के तहत कार्रवाई कर रहा है, वहीं राजनांदगांव सहित छत्तीसगढ़ के अन्य जिलों में प्रशासनिक मौन क्यों ह। समाचार के प्रकाशन के मात्र 3 दिन के भीतर शिक्षा विभाग ने हरकत में आते हुए पूरे प्रदेश के लिए कड़े निर्देश जारी कर दिए हैं।

इस कार्रवाई से अभिभावकों में उम्मीद जगी है कि अब निजी स्कूलों की मनमानी पर लगाम लगेगी और फीस निर्धारण में पारदर्शिता आएगी।

मुख्य बिंदु जो पत्र में शामिल हैं : डेडलाइन: 17.04.2026 तक सभी जिलों को रिपोर्ट सौंपनी होगी।

जिम्मेदारी: उप संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय ने सीधे तौर पर जिला शिक्षा अधिकारियों को जवाबदेह बनाया है।

उद्देश्य: निजी स्कूलों में फीस विनियमन कानून का सख्ती से पालन सुनिश्चित करना।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100